لا اله الا الله محمد رسول الله

# हज़रत मुहम्मद

## वर्तमान युग
## के
## जगद्व्यापी पैग़म्बर

*लेखक*

हज़रत मौलाना सद्रुद्दीन

*अनुवादक व संपादक*

डा० ख़ुर्शीद आलम तरीन

अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम (लाहौर) हिन्द

क़लमदान पुरा, श्रीनगर, कश्मीर,

पिन० 190002

www.aaiil.org

# हज़रत मुहम्मद

## वर्तमान युग के जगद्व्यापी पैग़म्बर

*लेखक*
हज़रत मौलाना सदरुद्दीन

*अनुवादक व संपादक*
डा॰ख़ुर्शीद आलम तरीन

**2001 AD**

अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम (लाहौर) हिन्द
क़लमदान पुरा, श्रीनगर, कश्मीर,
पिन॰ 190002

**www.aaiil.org**

## अहमदिय्या सम्प्रदाय के संस्थापक
## हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब[रअ] की घोषणा

"वह व्यक्ति *लानती* है जो हज़रत पैग़म्बरश्री (मुहम्मद)[सल्ल] के सिवा, उन के बाद , किसी और को *नबी* विश्वास करता है ,और उन की *ख़तमे नबूवत* को तौड़ता है।"

(अख़बार *'अल-हकम'* ,क़ादियान ,10जून 1905 ई. ,पृ. 2)

© कॉपीराइट सर्वाधिकार 2001

अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम (लाहौर) हिन्द
क़लमदान पुरा ,श्रीनगर ,कश्मीर — 19002

**अहमदिय्या अंजुमन इशाअते इस्लाम** — इस अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी प्रचार केन्द्र की स्थापना 1914 ई. में लाहौर में हुई। इस महा प्रचार केन्द्र के नींवदाता हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब[अस] के वरिष्ठ शिष्य थे। इस प्रचार केन्द्र का एकमात्र उद्देश्य इस्लाम की वह उदार, सहिष्णु और शांतिप्रिय छवि पुनः दुनिया के सामने रखना है ,जिस का सहज चित्रण कुर्आन शरीफ़ और हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद[सल्ल] के परमशुभ चरित्र में विद्यमान है। इस संस्था ने अब तक संसार की अनेक प्रमुख भाषाओं में इस्लाम पर अति विपुल साहित्य प्रकाशित किया है ,जो सर्वत्र अपार श्लाघा और ख्याति प्राप्त कर चुका है।

प्रथम हिन्दी संस्करण : 2001 ई.

محمد مصطفیٰ ( زمانہ حال کے پیغمبر، اقوام عالم کے پیغمبر)

حضرت مولانا صدرالدین علیہ الرحمۃ

*Muhammad Mustafa Zamana Hal Ke Paigambar,Aqwaam-e-Alam ke Paigambar* **(Muhamamd the Modern Prophet)**

**by Maulana Sadr-ud-Din**

# हज़रत मुहम्मद

# वर्तमान युग के जगद्व्यापी पैग़म्बर

लेखक

हज़रत मौलाना सदरुद्दीन

अनुवाद

डा. ख़ुर्शीद आलम तारीन

**www.aaiil.org**

# हज़रत मौलाना सदरुद्दीन

## (संक्षिप्त परिचय)

१८८१ ई॰ में सियाल कोट में जन्म लिया। मौलवी फ़ाज़िल, बी॰ए॰, एस॰ए॰वी॰ और बी॰टी॰ की डिगरियाँ प्राप्त करने के उपरांत पहले इन्स्पेक्टर आफ स्कूलज़ फिर टीचरस कॉलेज में अंग्रेज़ी के परोफेसर बने। १९०५ ई॰ में चौदवीं सदी हिज्री के " **मुजदिद्द** " ( युग–सुधारक ) तथा अहमदिय्या आंदोलन के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब (अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) के करकमलों पर " बैयत " की अर्थात् दीक्षा प्राप्त की। हज़रत मिर्ज़ा साहिब के **खलीफ़ा** (उत्तराधिकारी) हज़रत मौलना नूररुद्दीन ( अल्लाह उन पर अपनी दयालुता वर्षित करे ! ) और अहमदिय्या समिति के निवेदन पर १९०६ से १९१४ ई॰ तक क़ादियान के **तालीम अल्–इस्लाम हाई स्कूल** के प्रिंसिपल रहे। जब १९१४ में **अहमदिय्या जमाअत** में सिद्धांतों के आधार पर मतभेद हुआ तो आप भी हज़रत मौलाना मुहम्मद अली लाहौरी के साथ क़ादियान को छोड़ लाहौर चले आये और विश्वविख्यात इस्लामी प्रचार केन्द्र " **अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम लाहौर** " के नींवदाताओं में शामिल हो गए। १९१४ से १९१६ ई॰ तक लन्दन में बतौर मुस्लिम मिशनरी और इमाम कार्य किया। १९१९ ई॰ में पुनः लन्दन गए। १९२२ ई॰ में जर्मनी गए और **बरलिन मुस्लिम मिशन** की स्थापना की और १९२५ ई॰ में बरलिन की प्रथम मस्जिद का निर्माण किया। इस मस्जिद को जर्मनी के ऐतिहासिक समारकों में शामिल कर लिया गया है। १९४० ई॰ में क़ुर्आन शरीफ़ की जर्मन भाषा में टीका प्रकाशित की। यह टीका आज भी धार्मिक एवं साहित्यिक दृष्टि से जर्मन भाषा की प्रमाणिकतम टीका मानी जाती है। जब १९५१ ई॰ में हज़रत मौलाना मुहम्मद अली ( अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) का देहांत हुआ तो आप को अहमदिय्या अंजुमन इशाते इस्लाम लाहौर का **द्वितीय अमीर** ( अध्यक्ष ) चुना गया। आप १५ नवम्बर १९८१ ई॰ तक इसी पद पर बिराजमान रहे। आप के हाथ पर सेंकड़ों ग़ैरमुस्लिमों ने इस्लाम क़बूल किया, जिन में जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक डा॰ मारकूस और ऑसट्रेलिया के मुहम्मद असद ( जिन्हों ने क़ुर्आन शरीफ़ की टीका अंग्रेज़ी भाषा में लिखी है ) उल्लेखनीय हैं। हज़रत मौलाना सदरुद्दीन ने उच्च कोटि की अनेक धर्म–पुस्तकें भी रचीं जो हिन्द व पाक के जाने माने विद्वानों से श्लाघा प्राप्त कर चुकी हैं। कुछ नाम यह हैं : **ज़रूरते हदीस**, **मआरिफ अल्–क़ुर्आन**, **खसाइस अल्–क़ुर्आन**, **मुहम्मद मुस्तफ़ा ज़माना हाल के पैग़म्मबर** , **ग़रीबों के वाली**, **कामयाब ज़िन्दगी के तसौवर**, **क़ुर्आन करीम की बयान करदा साइन्स** आदि। इन सभी पुस्तकों का अंग्रेज़ी अनुवाद हो चुका है। प्रस्तुत पुस्तक उन की मशहूर लघु उर्दू कृति **"मुहम्मद मुस्तफ़ा : ज़माना हाल के पैग़म्मबर , अक़वामे आलम के पैग़म्बर"** का हिन्दी रूपांतर है।

# हज़रत मुहम्मद

## वर्तमान युग के जगद्व्यापी पैग़म्बर

### विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. | विश्व–धर्म | १ |
| २. | आध्यात्मिकता की विश्वव्यापी व्यवस्था | ७ |
| ३. | अंतर्राष्ट्रीय धर्म | ६ |
| ४. | दुनिया की हर कौम और जाति में नेक बन्दे पाये जाते हैं | १० |
| ५ | अन्य धर्मसमुदायों की धर्मपरायणता का कुर्आन शरीफ़ में उल्लेख | १२ |
| ६. | जातीय पक्षपात का निवारण | १३ |
| ७. | हज़रत पैग़म्बरश्री की शांतिमय शिक्षाओं पर एक विहंगम दृष्टि | १७ |
| ८. | हज़रत पैग़म्बरश्री का अन्तिम 'खुतबा' | १६ |
| ६. | परमपद व मोक्षलाभ | २३ |
| १०. | संस्दीय सरकार | २६ |
| ११. | शासकोंके लिए आदर्श और नमूना | २७ |
| १२. | ग़ैरमुस्लिमों पर शासन | २६ |
| १३. | मिस्र की ईसाई प्रजा के साथ व्यवहार | ३० |
| १४. | यमन के यहूदियों पर शासन | ३२ |
| १५. | न्याय और इन्साफ़ | ३४ |
| १६. | ग़ैर–मुस्लिमों से न्याय | ३६ |
| १७. | राजघराने की महिला | ३७ |
| १८. | फुटनोट और व्याख्यात्मक टिप्पणियां | ३८ |

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اللّٰھم صل علی محمد

وعلی آل محمد کما صلیت

علی ابراھیم وعلی آل ابراھیم

انک حمید مجید ○

اللّٰھم بارک علی محمد وعلی

آل محمد کما بارکت علی

ابراھیم وعلی آل ابراھیم

انک حمید مجید ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से, जो अपार दयालु, सतत् कृपालु है ।

# हज़रत मुहम्मद

## वर्तमान–युग के जगद्व्यापी पैग़म्बर

### विश्व–धर्म

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)[1] ने, चौदह सौ वर्ष पूर्व, संसार के बहुविध समाजों, वर्गों, जातियों, धर्मसमुदायों आदि को एकता और सौहार्द के पावन सूत्र में बांधने के लिये '***विश्व–धर्म*** ' पेश किया। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) को भली–भांति मालूम था कि संसार की सभी क़ौमें, सभी जातियां परमात्मा की सत्ता में आस्था तो रखती हैं, परन्तु वे उसे ' ***रब्बुल आलमीन*** ' अर्थात् सभी लोकलोकांतरों, प्राणियों, सृष्टि–वर्गों, का एकमात्र पालनहार–स्रष्टा नहीं मानतीं। प्रत्येक क़ौम, प्रत्येक जाति परमात्मा को सिर्फ अपना ही 'खुदा' विश्वास करती है। केवल अपने को ही उस का प्रिय–पात्र ठहराती है। स्वर्ग पर भी बस अपना ही हक़ जताती है। दूसरी कौमों और जातियों को कदापि अपने बराबर नहीं समझती,उलटा उन से नफरत करना अपने धर्म का ज़रूरी अंग मानती है। यहूदी कौम का उदाहरण लीजिए,उन का यह विश्वास है कि 'योवाह' बस उन्ही का खुदा है। यहूदी उसे विशेष प्रिय हैं। और तो और स्वर्ग में ~~ग़ैर–यहूदी~~ का प्रवेश ही वर्जित है। उनके मतानुसार यहूदी वही है जो जन्म से यहूदी हो। किसी

अन्य क़ौम का व्यक्ति यहूदी धर्म ग्रहण कर लेने से यहूदी नहीं बन सकता। यहूदियों की ये पक्षपातयुक्त संकीर्ण मान्यिताएं हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) के सामने थीं। चुनांचि संसारवासियों की अंतःचेतना को इस प्रकार की असत्य और बेबुनियाद धारणाओं एवं परिकल्पनाओं के प्रति जागृत करने के लिए ही क़ुर्आन शरीफ़ में इस किसम की मान्यताओं की चर्चा मिलती है :

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصَارٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ

अर्थात् और यहूदी कहते हैं : हम अल्लाह के पुत्र और उसके प्रेमपात्र हैं (५ : १८)।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى

अर्थात् और कहते हैं कि सिवाय यहूदियों के और कोई जन्नत मैं दाखिल नहीं हो सकता (२:१११)।

(وَقَالُوْا) لَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ

अर्थात् और ( अपने जातिजनों को कहते हैं ) कि अपने सहधर्मियों के अतिरिक्त किसी अन्य (धर्मप्रचारक) की बात न मानना (३:७३)।

यहूदियों का यह भी विश्वास है कि पैग़म्बर और अवतार[2] सिर्फ इस्राईल जाति में ही प्रकट हुए किसी अन्य जाति मैं नहीं। तात्पर्य यह कि अन्य सभी धर्मसमुदायों की धार्मिक संपदा एकदम उपेक्ष्य है। यहूदी लोग कहते हैं :

اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ

अर्थात् ( हे जातिजनों ! ) यह कभी नहीं होसकता कि किसी ग़ैर–यहूदी जाति को भी तुम्हारे जैसी आसमानी किताब प्रदान हो (३:७३)।

यहूदियों की घृणा और अहंकार इस हद तक बढ गया है कि वे दूसरी जातियों को अपवित्र करार देते हैं। अपवित्र ही नहीं बल्कि उन को कुत्ते और सुअर के बराबर विश्वास करते हैं। अंग्रेज़ी डिक्शनरी में GENTILE शब्द के अधीन लिखा है कि यहूदी लोग ग़ैर–यहूदियों को जनटाइल (GENTILE) कहते हैं , जिस का अर्थ है धर्महीन व नास्तिक। और लिखा है कि वे ऐसे लोगों की तुलना कुत्तों और सुअरों से करते हैं। हज़रत ईसा ( अ० स० )[3] यहूदी जाति के आख़री पैग़म्बर थे, उन के यहां भी ऐसे ही संकीरण विचारों की स्पष्ट घोषणा मिलती है :

' मैं दाऊद का पुत्र हूँ , और उसका राज्य पुनः स्थापित करना ही मेरा लक्ष्य है ' (बाइबिल)।

' मैं इस्राईल वशं की खोई हुई भेड़ों को छोड़कर अन्य किसी के लिए नहीं आया हूँ ' (मत्ती १५ : २४)।

' मुक्ति सिर्फ यहुदियों के लिए है ' (युहन्ना ४ : २२)।

हज़रत ईसा (अ०स०) अपने शिष्यों को यही सीख देते हैं कि वे यहूदियों के सिवा दूसरी जातियों में धर्मप्रचार न करें :

' (अपनी) पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो,और न अपने मोती सुअरों के सामने डालो ' (मत्ती ७ : ६) ।

हज़रत ईसा (अ०स०)ने एक कनानी महिला की सहायता करने से सिर्फ इस लिए इनकार कर दिया था कि वह ग़ैर—यहूदी थी :

' यीशु ने उत्तर दिया , बालकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना ठीक नहीं। वह बोली , हे प्रभु ! कुत्ते भी स्वामियों के मेज़ से गिरा हुआ चूरचार खाते ही हैं (मत्ती १५ : २६,२७)।

बाईबिल में लिखा है कि एक ग़ैर—यहूदी स्त्री कूएं से जल भर रही थी , हज़रत ईसा (अ०स०) ने उस से पीने के लिये जल माँगा।वह बेचारी आश्चर्यचकित होकर बोल उठी

' आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से जल माँग रहे हैं ? '
(यूहन्ना ४ : ६)।

इसी प्रकार की घृणा और पक्षपात हिन्दू समाज के दिलों में घर कर चुका है। कट्टरपंथी हिंदू ग़ैर—हिंदू के हाथ का जल या भोजन अपवित्र समझते हैं। यदि ग़ैर—हिंदू उनके खाने को छू जाए तो वे उस खाने को अपवित्र जानकर कुत्ते के आगे फैंक देते हैं। हिंदू अपनी जाति को ईश्वर की प्रिय जाति विश्वास करते हैं (वैदिक काल का हिंदू स्वयं को ' ***आर्य*** ' कहता था, और आर्य शब्द का अर्थ ' ***निरुक्त*** ' में *ईश्वर का पुत्र* आया है— अनुवादक)। वे भारत को ब्रह्मवर्त यानि ईश्वर की धरती विश्वास करते हैं ( यही वजह है कि संपूर्ण हिन्दू धर्म—साहित्य में किसी ग़ैर—भारतीय अवतार या पैग़म्बर का सर्वथा कोई उल्लेख नहीं,और न ही वहाँ किसी ग़ैर—भारतीय पैग़म्बर आदि को मान्यता प्रदान की गई है — अनुवादक)। यहूदियों की भांति वे भी ग़ैर—हिन्दू को अधर्मी,अनार्य और म्लेच्छ (अर्थात् नीच , पापी) करार देते हैं।

आशय यह कि कौमों और जातियों के दिलों में आज तक यही घृणास्पद भावनाएं और तंगनज़रियाँ निवास किये हुए हैं। इन्ही अवैज्ञानिक एवं पक्षपातयुक्त संकीरण भावनाओं ने दुनिया भर में अशांति,नफरत और आपसी तनाव का वातावरण पैदा कर रख है। इसी विश्वव्यापी विकट रोग के निवारण का महत्वपूर्ण किन्तु दुष्कर कार्य हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) के सामने था। जब तक सदियों से चली आ रही इन दुर्भावनाओं को दूर नहीं किया जाता जातियों और राष्ट्रों का एकताबद्ध होना असंभव है। और इन दुर्भावनाओं को मिटाने के लिये ज़रूरी है कि कौमों और जातियों के दिल व दिमाग़ में एक सुखद परिवर्तन लाया जाए। और परिवर्तन आ नहीं सकता जब तक मानव–चित्त का यह पक्षपातयुक्त अँधकार प्रेम और आत्मीयता के शीतल प्रकाश से बदल नहीं जाता। सौहार्द और आत्मीयता के इसी परम शुभ प्रकाश को उत्पन्न करने के लिये हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि ईश्वर किसी खास क़ौम , जाति या राष्ट्र का ईश्वर नहीं , बल्कि वह " ***रब्बुल आलमीन*** " है। अर्थात् संसार की सभी जातियों ,क़ौमों और राष्ट्रों को उसी एकमात्र ईश्वर ने पैदा किया है। वही सर्वसंसार का एकमात्र पालनहार है। इस वास्तविकता का विश्वास दिलाने के लिये हज़रत पैग़म्बर श्री (सल्ल॰) ने संसार वासियों के सामने उन्हीं का अनुभव रखा , ताकि उन को इस बात का भली–भांति यक़ीन आ जाए कि अल्लाह ,भगवान , ईश्वर परमात्मा, गॉड,खुदा आदि एक ही सत्ता के नाम हैं। और वही एकमात्र सत्ता समस्त जातियों , क़ौमों और देशों की एकमात्र रचियता तथा प्रतिपालक है। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

> " देखो ! एक ही धरती है जिस ने संसार की समस्त जातियों ,राष्ट्रों और धर्म–समाजों को अपनी विशाल पीठ पर जगह दे रखी है। एक ही आकाश है जो छत की भांति संपूर्ण भूमंडल पर फैला हुआ है। एक ही जल है जो वर्षा के रूप में आकाश से बरसता है,और सभी के खेतों को एकसमान सींचता है।एक ही सूरज है जो सभी लोगों को न सिर्फ गर्मी और प्रकाश मुहैया करता है , बल्कि उन के लिये अनाज और फल भी पकाता है।"

इस तरह हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने दुनिया की सभी कौमों और जातियों पर यह वास्तविकता भी सुस्पष्ट कर दी कि :

وَإِلٰهُنَا وَإِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ

" (खूब याद रखो !) हमारा ईश्वर और तुम्हारा ईश्वर वास्तव में एक ही है, हम सब उसी एक ईश्वर की रचना हैं , वही हम सब का लालन–पालन और भरन–पोषण करता है।" (कुर्आन २९ : ४६)

इस से यही सिद्ध हुआ कि हम सब मानव ईश्वर का एक अति विशाल परिवार हैं।हम सब मनुष्य एक ही जाति अर्थात् " मानव–जाति " हैं। अतः एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति सनेह और प्रेमभाव रखना परमावश्यक है। एक दूसरे के प्रति घृणा , द्वेष ,भेदभाव या शत्रुता का व्यवहार बिल्कुल अनुचित और अमानवीय है।इन्ही सर्वविदित तथ्यों को कुर्आन शरीफ़ ने यों दर्शाया है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ
أَنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

"हे लोगो ! अपने 'रब' यानि पालनहार–स्रष्टा की उपासना करो जिस ने तुम सब को पैदा किया , और उन को भी जो तुम से पहले थे , ताकि तुम अधर्म से बच जाओ। तुम्हारा रब वही है जिस ने धरती को तुम्हारे लिये फ़र्श बनाया , और आकाश को छत, और ऊपर से जल बरसाया , फिर उस जल से तुम्हारे खाने के लिये फ़ल उपजाये। सो तुम (औरों को) अल्लाह का समकक्ष न ठहराओ,जबकि तुम जानते हो ( कि ऐसा करना सत्य नहीं )।"
(कुर्आन २:२१,२२)

इसी तथ्य को अन्यत्र प्रकारांतर से यों प्रतिपादित किया है :

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً

" और सब मनुष्य एक ही जनसमुदाय हैं।" ( कुर्आन १० : १९ )

यह जनसमुदाय एक ऐसे विशाल घर में रह रहा है जिसका फर्श धरती ,और छत आकाश है। इस बिराट् घर को आबाद और बसाये रखने वाला भी एक ही दयालु–कृपालु परमेश्वर है , जो सर्वजगत का " रब " यानि प्रतिपालक है। वह केवल मुसलमानों का " रब " नहीं ,वह केवल हिन्दुओं का " रब " नहीं ,वह केवल यहूदियों का " रब " नहीं बल्कि वह संपूर्ण मानवजाति का रचयिता और पालनहार है।

इस से यही साबित हुआ कि हम सब के सब परमेश्वर को समान रूप से प्यारे हैं। यही वजह है कि उस ने अपने वरदानों और उपकारों को किसी एक क़ौम या जाति के लिये विशेषीकृत नहीं किया , और न कभी किसी क़ौम या जाति को उन से वंचित

ही रखा। ईश्वर सभी मनुष्यों से एक जैसा प्रेम करता है। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

اَللّٰھُمَّ رَبنا وَ رَبّ کُل شَئی اَنَا شَھِیدان العباد کلھم اخوۃ

" हे हमारे प्रभुवर ! तू ही हमारा तथा (सृष्टि की) प्रत्येक वस्तु का पालनहार –स्रष्टा है । मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि तेरे सब बन्दे आपस मैं भाई–भाई हैं।"

और फ़रमाया :

" हम सब मूलपुरुष आदम ( *ADAM* )* की सन्तान हैं और आदम को मिट्टी से पैदा किया गया ।"

यही वे अपूर्व सिद्धांत और मान्यताएं हैं जो दिलों मैं बसी तंगनज़री और पक्षपात के अंधियारों को दूर कर वहां उदारता और सौहार्द का प्रकाश जगा देती हैं। मुर्दा दिलों को फिर से अनुप्राणित कर देने वाली ये विश्वव्यापी संजीवनी शिक्षाएं हज़रत पैग़म्बर–श्री मुहम्मद (सल्ल॰) को वर्तमान युग का जगद्व्यापी पैग़म्बर सिद्ध करती हैं। इन्ही सदा बहार जीवनदायक शिक्षाओं से हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के मिशन की व्यापकता का अंदाज़ा हो जाता है। इसी लिये हज़रत पेग़म्बर–श्री (सल्ल॰)द्वारा यह ऐलान करवाया गया :

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

" (हे मुहम्मद !) यह घोषणा कर दे : ' हे संसारवासियो ! मैं तुम सब के मार्गदर्शन हेतु परमात्मा की ओर से पैग़म्बर बन कर आया हूँ।उसी परमात्मा की ओर से जिस का राज्य आकाशों और धरती पर है ' ।"

(कुर्आन ७ : १५८)

अन्यत्र फ़रमाया है :

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَىٰ عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا

" अत्यन्त बरकत वाला है वह (परमात्मा) जिस ने अपने परम भक्त (मुहम्मद) पर यह '*फ़ुर्क़ान*' (सत्यासत्य का प्रभेदक कुर्आन) उतारा , ताकि वह समस्त मानव–समाजों को सचेत करनेवाला हो।" (कुर्आन २५ : १)

पुनः फ़रमाया : تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

" यह कुर्आन वह ग्रन्थ है जिस को ' ***रब्बुल् आलमीन*** '( समस्त लोकलोकांतरों के पालनहार- स्रष्टा) ने सर्वसंसार के पथप्रदर्शन हेतु उतारा।" (कुर्आन ५६ : ८०)

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ

" यह कुर्आन समस्त मानव समाजों और जातियों के लिये दिव्य उपदेश है।" (कुर्आन १२ : १०४)

और साथ ही यह अपूर्व घोषण भी कर दी :

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ

" और निस्संदेह हम ने संपूर्ण मानव–जाति को इज़्ज़तदार बनाया।" (कुर्आन १७ : ७४)। अतः हर क़ौम, हर जाति, हर मनुष्य आदरणीय है। सब का आदर करो , किसी को नफ़रत या घृणा से न देखो।

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ

" कोई जाति, क़ौम , समाज या राष्ट्र किसी दूसरी जाति , कौम ,समाज या राष्ट्र का उपहास न करे।" (कुर्आन ४९ : ११)

इन परम शुभ एवं कल्याणमय शिक्षाओं का सारांश यही है कि –– हे संसारवासियो ! संपूर्ण ब्रह्मांड के एकमात्र रचयिता एवं प्रतिपालक पर विश्वास लाओ, और यथार्थ में ईश्वर का ऐसा परिवार बनकर दिखओ जिस में स्नेह हो, मानवता हो, प्यार हो, और परस्पर सहानुभूति हो, ताकि इसी धरती में स्वर्ग का सा शांतिमय वातावरण पैदा हो जाए।

## अध्यात्मिकता की विश्वव्यापी व्यवस्था

दयामय परमात्मा ने जहां संसारवासियों की शारीरक आवश्यकताों की पूर्ति के लिये इतने बड़े जगत की व्यवस्था कर रखी है , वहीं उस ने उन की रूहानी और अध्यात्मिक उन्नति व प्रशिक्षण का सुचारु प्रबन्ध भी कर रखा है। ईश्वर हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) को संबोधित कर फ़रमाता है :

إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ

" (हे मुहम्मद !) जिस प्रकार तुझे अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुंचाने के लिये नियुक्त किया गया है उसी प्रकार प्रत्येक कौम और जाति में हमारे भेजे हुए पथप्रदर्शक आ चुके हैं।" (कुर्आन १३ : ७)

وَ رُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَ رُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ

" कुछ रसूलों–अवतारों का उल्लेख हम ने नामसहित कर दिया है परन्तु अन्य रसूलों और अवतारों के नाम तुझ को नहीं बताये गये हैं।"

(कुर्आन ४ : १६४)

अतः अध्यात्मिक क्षेत्र का नियम यही है कि प्रत्येक कौम या जाति में प्रभु द्वारा भेजा गया कोई न कोई पथप्रदर्शक, नबी, पैग़म्बर ,रसूल या अवतार अवश्य प्रकट हो।और ये सभी महापुरुष अपने उत्कृष्ट एवं आदर्श कार्यो के कारण समान रूप से आदरणीय हैं। तात्पर्य यह कि संसारवासियों को समानता की शिक्षा देने के लिये ही ईश्वर ने उन्हें धरती रूपी विशाल घर में बसाया,और सब को समान रूप से अपने वरदानों द्वारा लाभान्वित किया। और अब अपने अन्तिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) द्वारा उनके दिलों में संसार के समस्त पथप्रदर्शकों के प्रति श्रद्धा और प्रीति की पावन भवना जगा दी,ताकि कौमों और जातियों को एकता और सौरहार्द के सूत्र में बांध दिया जाये।एक दूसरे के ऋषियों, मुनियों, पैगम्बरों, अवतारों पर " ***ईमान*** " (विश्वास) लाना,और शुद्ध हृदय से उनका आदर करना– यही वे अचूक उपाय हैं जो संसार के छिन्न–भिन्न तथा भेदभाव के विकट रोग से पीड़ित जनसमाजों को रोगमुक्त कर उन्हें बंधुत्व और एकता के पवित्र सूत्र में पुनः बांध देते हैं।इसी महा पावन लक्ष्य की पूर्ति का प्रथम आदर्श नमूना स्वयं हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने प्रस्तुत किया। फ़रमाया :

اٰمَنْتُ بِمَا اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ وَ اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ
اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمْ لَنَاۤ اَعْمَالُنَا وَ لَكُمْ اَعْمَالُكُمْ لَا حُجَّةَ
بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمْ اللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا

" मैं हर उस ग्रन्थ पर 'ईमान' लाता हूँ जिस को अल्लाह ने किसी काल में किसी कौम या जाति के पथप्रदर्शक पर उतारा।और मुझे आदेश मिला है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ। अल्लाह हमारा पालनहार–स्रष्टा है और तुम्हारा पालनहार–स्रष्टा भी। खूब याद रखो ! मुक्ति का आधार कर्म हैं।हमारे कर्मो का फल हमारे लिये है और तम्हारे कर्मो का फल तम्हारे लिये।यदि हमारे कर्म अच्छे न हुए तो अमंगल हमारा ही होगा। और जो कहीं तुम्हारे

कर्म अच्छे हुए तो कल्याण तुम्हारा होगा।अतः हमारे और तुम्हारे बीच झगड़े की कोई गुंजाइश नहीं।हमारी यही प्रार्थना है कि अल्लाह हम को और आप को एक कर दे और नेक कर दे।" ( क़ुर्आन ४२ : १५ भावार्थ )

इस घोषणा में जिन पुनीत विचारों की अभिव्यक्ति हुई है वे ***"विश्व–धर्म"*** की आधारभूत शिला हैं। यदि आज के धार्मिक नेता और विचारकगण इन प्रकाशवान् आदेशों को अपना लें तो " ***विश्व–बंधुत्व*** " के सपने का साकार हो जाना कठिन नहीं।

# अन्तर्राष्ट्रीय धर्म

क़ुर्आन शरीफ़ में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) को संबोधित कर कहा गया है :

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ
أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا
بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ

" हे मुहम्मद ! कह दे : हे ईश्वरीय ग्रन्थ वालो ! एक ऐसी बात की ओर चले आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है , और वह यह कि हम एक परमात्मा के सिवा किसी और की उपासना न करें , और न किसी चीज़ को उसका साझी ठहराएं , और न हम परमात्मा को छोड़ किसी (देवी--देवता,जीव,मनुष्य आदि) को अपना ' रब ' यानि पालनहार–स्रष्टा बनाएं।" (क़ुर्आन ३ : ६४)

इन आयतों में सभी धर्मों के अनुयायिओं को धर्म के मूल सिद्धांत पर एकजुट होजाने की आम दावत है।प्रत्येक सत्यप्रिय व चिंतनशील व्यक्ति हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के इस महत्वपूर्ण कदम की कदर करेगा।क्योंकि यही वह एकमात्र उपाय है जिस से मानवसमाज में सच्ची बंधुता,एकता,मित्रता,उदारता और पक्षपातरहितता का सहज उदय होता है।

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने इस सुखद दावत को जहाँ अरब में बसने वाले यहूदियों और ईसाइयों के आगे प्रस्तुत किया वहीं इस शांतिमय दावत को पत्रों द्वारा ईरान के सम्राट कसरा,रोम के सम्राट हरक़ल,मिस्र के सम्राट मक़ोक़स और हबशः के सम्राट नजाशी की सेवा में भी भेजा।इन सब पत्रों की विषयवस्तु एकसमान है।[1] पाठकगण की ज्ञानवृद्धि के लिये यहाँ एक पत्र नक़ल किया जाता है :

अल्लाह के (पावन)नाम से , जो अपार दयालु , सतत् कृपालु है।

***यह पत्र अल्लाह के सेवक और उस के रसूल मुहम्मद की ओर से मिस्र के सम्राट मक़ोक़स के नाम है।***

उस को सलाम जो अल्लाह के कहे पर चले !

तत्पश्चात् , मैं आपको इस्लाम की दावत देता हूँ। यदि आप इस्लाम क़बूल कर लें तो आप को शांति प्राप्त होगी , और परमात्मा आप को दोहरा पुण्यफल देगा। और यदि आप ने मुँह फेर लिया तो आप पर आपकी प्रजा का पापदोष भी लगेगा। " हे ईश्वरीय ग्रन्थ वालो ! एक ऐसी बात की ओर चले आओ जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है , और वह यह कि हम एक परमात्मा के सिवा किसी और की उपासना न करें , और न किसी चीज़ को उस का साझी ठहराएं , और न हम परमात्मा को छोड़ किसी ( देवी–दवता,जीव,मनुष्य आदि ) को अपना 'रब' यानी 'पालनहार–स्रष्टा' बनायें। और यदि वे इस प्रस्ताव को रद्द कर दें तो कह दे : गवाह रहना कि हम तो अल्लाह के प्रति पूर्ण समर्पण करने वाले हैं (क़ुर्आन३ : ६४)।"

**अल्लाह**
**रसूल**
**मुहम्मद**

इन पत्रों ने मिस्र के सम्राट , शाम के सम्राट और हबशः के सम्राट पर बड़ा ही अच्छा प्रभाव डाला। अतएव उन्हों ने हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के दूतों का संपूर्ण सत्कार किया , आप की शिक्षाओं को सराहा और पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के प्रति श्रद्धा और सुरुचि प्रकट की। मिस्र के सम्राट ने आपकी सेवा में बहुमूल्य उपहार भेजे। महाराजा नजाशी यहाँ तक प्रभावित हुआ कि उस ने खुलमखुला इस्लाम क़बूल कर लिया।

इन पत्रों का उल्लेख विश्व–इतिहास में मौजूद है। पूर्वी और पश्चिमी , दोनों इतिहासकारों ने अपनी अपनी इतिहास कृतियों में इन पत्रों की चर्चा की है। इन अमिट ऐतिहासिक तथ्यों से यही साबित होता है कि हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के हृदय रूपी दयासागर में सर्वसंसार की एकता और सुसंघटन के लिये प्रेम और स्नेह की कितनी अगाध लहरें मचलती थीं। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) को पुर्ण विश्वास था कि इस लक्ष्य की उपलब्धि में ही सच्चा विश्वबंधुत्व और स्थाई विश्वशांति निहित है।

# दुनिया की हर क़ौम और जाति में

11

# अल्लाह के नेक बन्दे पाये जाते हैं

परमात्मा ने प्रत्येक क़ौम और प्रत्येक जाति में अपने पैग़म्बर और अवतार भेजे। यह इन्ही महापुरुषों की मंगलमय शिक्षाओं और उनके व्यक्तिगत आदर्शों का शुभपरिणाम है कि विभिन्न क़ौमों और जातियों में नेक लोग पैदा होते रहते हैं। पवित्र क़ुर्आन का कथन है :

فَاُولٰئِکَ ـــ اَنْعَمَ اللّٰہُ عَلَیْھِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَالصِّدِّیْقِیْنَ
وَالشُّھَدَآءِ وَالصّٰلِحِیْنَ

" अल्लाह ने संसार की विभिन्न क़ौमों और जातियों में के जिन महापुरुषों पर अपने अनुग्रह और वरदान वर्षित किये वे इस प्रकार हैं : प्रथमतः प्रभु के भेजे हुए पैग़म्बर–अवतार और आगे उन की पावन शिक्षाओं से लाभांवित होने वाले ' सदीक ' यानि सत्यनिष्ठ, ' शहीद ' और ' सालिहीन ' यानि सदाचारी।" (क़ुर्आन ४ : ६९ )

आशय यह कि दुनिया की हर कौम और हर जाति में साधुवृति वाले धर्मात्मा लोग पाये जाते हैं। ये लोग शुद्धाचार तथा सद्गुणों से सम्पन्न होते हैं। ये लोग एक निष्पाप और पवित्र जीवन जीते हैं , और अपने निर्मल एवं निस्स्वार्थ सेवाभाव से अपनी अपनी क़ौम और जाति के जनकल्याण में हर वक्त रत रहते हैं। ये लोग जनोपकार के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देने से भी नहीं हिचकते। सत्यवादिता , ईमानदारी , और न्यायशीलता उनके आदर्श व्यक्तित्व व कृतित्व के सहज प्रतीक होते हैं। पथभ्रष्टता , अनैतिकता , अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुध आवाज़ उठाना , समाजविरोधी तत्वों से लोहा लेना उनका परम धर्म होता है। इसी वास्तविकता की अभिव्यक्ति क़ुर्आन शरीफ़ की निम्नोद्धृत आयतों में होती है :

لَیْسُوْا سَوَآءً مِنْ اَھْلِ الْکِتَابِ اُمَّۃٌ قَائِمَۃٌ یَتْلُوْنَ اٰیَاتِ اللّٰہِ اٰنَآءَ الَّیْلِ وَھُمْ یَسْجُدُوْنَ ۝ یُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰہِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَ یَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ یَنْھَوْنَ عَنِ الْمُنْکَرِ وَ یُسَارِعُوْنَ فِی الْخَیْرَاتِ
وَ اُولٰئِکَ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَمَا یَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ فَلَنْ یُّکْفَرُوْہُ وَ اللّٰہُ عَلِیْمٌ بِالْمُتَّقِیْنَ ۝

" यानि जातियों और कौमों के सभी सदस्य एकसमान नहीं होते। इन में ऐसे गिरोह भी पाये जाते हैं जो परमेश्वर के आदेशों पर यथावत क़ायम होते हैं और सदा न्याय और निष्पक्षता से काम लेते हैं। ये लोग रात की घड़ियों में

अल्लाह की वाणी , अल्लाह की आयतों की 'तिलावत' (विधिवत पाठ) करते हैं और अल्लाह के समक्ष सजदा करते हैं।अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाते हैं, लोगों को अच्छे कर्मो का अनुदेश देते हैं और बुरे कर्मो से रोकते हैं और नेक कामों में एकदूसरे से आगे निकलने की कोशिश करते हैं।और यही लोग सदाचारी हैं। और जो भी अच्छा कर्म वे करेंगे उस की नाक़दरी न की जाये गी उन्हें उसका पण्यफल अवश्य मिलेगा।और अल्लाह कर्तव्यनिष्ठों को भलीभांति जानता है।" (कुर्आन ३ : ११३ से ११५ )

ये आयतें इसी तथ्य को प्रतिपादित करती हैं कि सभी क़ौमों , जातियों और धर्मो में नेक और सज्जन पुरुष पाये जाते हैं। इस तरह की उदार शिक्षाएं और किसी ग्रन्थ में नहीं पाई जातीं।

# अन्य धर्मसमुदायों की धर्मपरायणता का कुर्आन शरीफ़ में उल्लेख

कुर्आन शरीफ़ फ़रमाता है :

وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا
نَصَارَىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا
يَسْتَكْبِرُونَ ٥

" और ( हे मुहम्मद ! ) तू ईमान वालों के प्रति मित्रता रखने में सब से घनिष्ठ उन लोगों को पायेगा जो अपने को ईसाई कहते हैं। कारण , कि उन के यहाँ विद्वान और वैरागी धर्मगुरु हैं, और इस लिये भी कि ये अभिमान नहीं करते बल्कि विनम्रता दिखाते हैं।" ( कुर्आन ५ : ८२ )

وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ
رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ
إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ٥

" और (अन्त पर) मरयम के पुत्र ईसा को भेजा , और उस को *'इंजील*

( GOSPEL ) प्रदान की, और जिन लोगों ने उस का अनुसरण किया हम ने उन के दिलों में करुणा और दया रख दी।और रहा वैराग्य का मामला तो यह प्रथा उन्हों ने स्वयं निकाली––हम ने इसे उन के लिये अनिवार्य नहीं ठहराया अल्लाह की प्रसन्नता पाने के लिये , परन्तु वे इस का यथावत पालन न कर सके। अतः उन में से जो सच्चा ईमान लाये थे हम ने उन्हें उनका पर्याप्त प्रतिफल प्रदान कर दिया।"( क़ुर्आन ५७ :२७ )

यहूदियों के बारे में फ़रमाया है :

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰىٓ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ

" और मूसा की जाति मैं एक गिरोह ऐसा भी है जो सत्यानुकूल मार्गदर्शन करता है और इसी आधार पर न्याय करता है।" (क़ुर्आन ७ : १५९)

इस तरह की सभी आयतों का एक ही मतलब है और वह यह कि दूसरे धर्मो के अनुयायिओं के अच्छे गुणों और उन के नेक कर्मों का एतिराफ किया जाए। ऐसा करने से जातियों और धर्मों के बीच सद्भाव और सहज प्रेम उत्पन्न होगा और नफरत और घृणा जैसी दुर्भावनाओं का आप से आप लोप हो जायेगा। अब हम क़ुर्आन शरीफ़ की वह अपूर्व और अनुपम आयत प्रस्तुत करते हैं जिस में संपूर्ण मानवजाति में ही नेक , ईमानदार और न्यायशील लोगों के मौजूद होने की चर्चा है :

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ

"परमात्मा द्वारा रचित प्राणियों में ऐसे गिरोह अवश्य मिलते हैं जो सत्य का मार्ग दिखलाते हैं और सत्यानुसार न्यायोचित कर्म करते हैं।"

(क़ुर्आन ७ : १८१)

उपरोक्त आयतों से स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इस अटल वास्तविकता को मनवाते हैं कि संपूर्ण मानवजाति में धर्मपरायण और ईश्वर–भक्त विभूतियां पाई जाती हैं। ये प्रकाशमय एवं कल्याणमय शिक्षाएं दिलों से भेदभाव और तन्गनज़री जैसी कटु–भावनाओं को दूर कर उन के स्थान पर अंतर्जातीय और अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव , सौहार्द और मित्रता जैसी पावन–भावनाएं जागृत कर देती हैं।

## जातीय भेदभाव और पक्षपात का निवारण

जातीय भेदभाव और पक्षपात ही वह मुख्य कारण है जिस से विश्व–शांति भंग होती है। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) को इस बात का पूर्ण ज्ञान था , चुनांचि उन्हों ने संसार में बसने वाली सभी क़ौमों और जातियों को आपसी भेदभाव त्याग देने की सीख दी। क्योंकि जब तक इस घातक रोग का निवारण न किया जाये संसार में स्वस्थ एवं शांतिमय वातावरण की स्थापना असंभव है।

हिन्दू का विश्वास है कि ब्रह्मा सिर्फ हिन्दू जाति का ईश्वर है, अतः हम ही उस की प्रियतम जाति हैं। भारत देश से परे जितने धर्म , जितनी जातियां हैं वे सब अपवित्र और मलेच्छ हैं। उन के स्पर्श मात्र से हम और हमारे खान–पान की वस्तुएं अपवित्र हो जाती हैं। फलतः कट्टरपंथी हिन्दू ग़ैर–हिन्दू घृणा और नफरत करता है।गैर–हिन्दू के बरतन चाहे कितने ही साफ सुथरे क्यों न हों हिन्दू उन को अपवित्र ही समझता है। भूले से भी गैर–हिन्दू के बरतन इस्तेमाल नहीं करता।

यह नफरत और घृणा केवल भारत से बाहर बसने वाली जातियों के प्रति ही नहीं , बल्कि उच्च वर्ग के हिन्दू स्वयं भारत में बसने वाले करोड़ों निम्न वर्गीय अछूतों को अति घृणा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। इन्ही अछूतों में के अनेकों बुद्धिमान और प्रतिभाशाली नवयुवक यूरोप की यूनिवर्सिटियों से उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटते हैं, कट्टर पंथी हिन्दू उन्हें फिर भी अपवित्र और अस्पृश्य ही समझता है।आये दिन अख़बारों में ऐसी ख़बरें पढ़ने को मिलती हैं कि फुलाँ जगह इतने परिवारों की हत्या कर दी गयी , कारण , वे अछूत थे।

यूरोप से उच्च शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटने वाले शूद्र नवयुवकों में एक डा० अम्बेडकर भी थे। वे अंग्रेज़ी शासन के दौरान संसद सदस्य भी चुने गये थे।मुम्बई के लॉ कॉलेज के प्रिंसिपल भी नियुक्त हुए। आगे चलकर स्वतंत्र भारत के कानून मंत्री भी बने। किन्तु रहे अछूत के अछूत ही। वे हिन्दू समाज में शादी न कर सके , हिन्दू मंदिरों में प्रवेश न पा सके , हिन्दुओं के संग मिलकर खाना न खा सके। उन्हों ने इस खुले अन्याय और अमानवीय कठोरता के खिलाफ़ आवाज़ उठाई।उन्हों ने कई पब्लिक लैकचरों में हिन्दूधर्म को सरासर अवैज्ञानिक और बुद्धिविरुद्ध बताया। कई पत्र–पत्रिकाओं में ऐसे अनेकों लेख प्रकाशित किये जिन में हिन्दू समाज की तंगनज़री भेद–भाव और छुवाछूत जैसी कुप्रवृतियों का भांडा फोड किया है। परन्तु यह सब प्रयास विफल सिद्ध हुए।डा० अम्बेडकर को फिर भी हिन्दू–समाज में स्थान न मिल सका ।अंततः विवश हो कर उन्हों ने बौध धर्म ग्रहण कर लिया।और हिन्दू समाज की कठोरता के प्रति शोक प्रकट करते हुए परलोक सिधर गये।

यहूदी कौम का रंगढंग भी हिन्दू जाति से भिन्न नहीं। हिन्दुओं की भांति यहूदी का विश्वास भी यही है कि यहूदी होने केलिये जन्मजात यहूदी होना ज़रूरी है। किसी दूसरी कौम या जाति का व्यक्ति यहूदी नहीं होसकता। यहूदियों की मान्यता है कि " योहवाह " बस हमारा ही परमेश्वर है , केवल हम ही उस की प्रिय जाति हैं। और यह कि मुक्ति पाने का अधिकार सिर्फ यहूदी को ही प्राप्त है किसी ग़ैर–यहूदी को

नहीं। इस से भी बढ़कर यह कि पैग़म्बर—अवतार या सन्त—महात्मा केवल यहूदी क़ौम में ही जन्म ले सकते हैं, अन्य सभी जातियां आध्यात्मिक ज्ञान आदि से सर्वथा वंचित हैं। यहूदियों की मान्यता यह भी है कि यहूदी के लिये गैर—यहूदी धर्मप्रचार पर कान धरना अवैध है।

क़ुर्आन शरीफ़ ने धर्म—जगत के इन दोषों को एक एक कर गिनवाया है , ताकि लोग इन मिथ्या एवं अवैज्ञानिक धारणाओं का परित्याग कर दें :

نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّاؤُهٗ

"(कहते हैं) हम ईश्वर की सन्तान और उस के प्रेमपात्र हैं , और केवल हम ही आध्यात्मिक शिक्षाओं के वारिस हैं।" (क़ुर्आन ५ : १८ )

لَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ

"किसी भी ऐसे व्यक्ति की बात पर कान न धरो जो तुम्हारे धर्म का अनुयायी न हो।" (क़ुर्आन ३ : ७३)

اَنْ يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ

"ऐसा सोचो ही मत कि जो ईश्वरीय ग्रन्थ तुम को मिला है उस जैसा ग्रन्थ किसी और को भी प्राप्त हो सकता है।"(क़ुर्आन ३ : ७३)

हज़रत ईसा (अ॰स॰) यहूदियों के अन्तिम पैग़म्बर थे। मुसलमान भी उन्हें अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर मानते हैं , और दिल से उन की इज़्ज़त करते हैं , और उन की लाई हुई किताब यानि GOSPEL को ईश्वरप्रषित विश्वास करते हैं। इसी ग्रन्थ में हज़रत ईसा घोषणा करते हैं :

"मैं इस्राइल वंश की खोई भेड़ों को छोड़ कर अन्य किसी के लिये नहीं भेजा गया।"(मत्ती १५ : २४)

उन्हों ने अपने शिष्यों को यही आदेश दिया :

"अन्य जातियों के नगरों की ओर न जाओ , और न सामरी लोगों के नगरों में प्रवेश करो , वरन इस्राएल वंश की भटकी हुई भेड़ों के पास जाओ।"
(मत्ती १० : ५,७)

"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो , और न अपने मोती सुअरों के सामने डालो।"
(मत्ती ७ : ६)

हज़रत ईसा (अ०स०) यहूदी समाज का अंग थे , वे यहूदी वातावरण में पले–बढ़े थे। इस लिये वे भी ग़ैर–यहूदी से नफ़रत करते थे। यदि यहूदी गैरयहूदी की तुलना कुत्ते और सुअर से करते हैं तो हज़रते ईसा (अ०स०) भी गैरयहूदी को कुत्ते और सुअर के समान ही ठहराते हैं। एक गैरयहूदी कनानी महिला को संबोधित कर कहते हैं :

"यह ठीक नहीं कि बालकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डाली जाये।"
(मरकूस ७ : २७)

इस महिला ने यह उत्तर दिया :

"सच है प्रभु , पर कुत्तों को भी बच्चों के भोजन का चूरचार मेज़ के नीचे मिल ही जाता है ।" (मरकूस ७ : २८)

हज़रत ईसा की तुलना में इस महिला का कथन अधिक सभ्य और विनम्र है।एक और स्थल पर हज़रत ईसा फ़रमाते हैं :

"मुक्ति केवल यहूदियों के लिये है।"(यूहन्ना ४ : २२)

हज़रत ईसा (अ०स०) के इस कथन से भी जातिवाद ही झलकता है। सारांश यह कि हिन्दुओं और यहूदियों की धार्मिक मान्यताओं के अंतर्गत अन्य क़ौमें और जातियां तुच्छ और घृणित करार पाती हैं। कितना दुर्भाग्य है कि ये लोग आज के वैज्ञानिक युग में भी इन्ही अवैज्ञानिक और निंदित धरणाओं पर अड़े बैठे हैं।

अमरीका के गोरों ने काली चमड़ी वाले हबशियों के साथ ऐसा ही अमानवीय व्यवहार अपना रखा है। अमरीका वालों पर मानो जातीय–प्रधनता का भूत सवार हो चुका है। इसी लिये वे हबशियों पर ज़ुल्म ढाने , उनके साथ बर्बरतापूर्वक व्यवहार करने से ज़रा भी नहीं हिचकते।कहने को अमरीका वाले बड़े लिखे पढ़े हैं , सभ्य हैं , शिक्षा और विज्ञान के क्षेत्र बहुत आगे हैं , पर फिर भी अपनी जातिगत श्रेष्ठता में विश्वास रखते हैं। अपने ही जैसे इन्सानों को उन के मानवीय अधिकारों से वंचित कर देने पर सिर्फ इस लिये तुले हुए हैं कि उन की चमड़ी गोरी नहीं , काली है। अमरीकियों के इन्ही अत्याचारों की प्रतिक्रिया ने काली चमड़ी वालों के अन्दर आज़ादी के लिये एक ज़ोरदार आंदोलन पैदा कर दिया। और यह आंदोलन अब तूफ़ान बन चका है।

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) ने विश्वशांति की स्थाई स्थापना के लिये ऐसी शिक्षाएं प्रस्तुत कीं , जिन के शुभ प्रभाव से उन के जीते जी जातिमूलक , वर्णमूलक , भाषामूलक , धर्ममूलक अर्थात् सभी प्रकार के भेदभाव और झगड़े सदासर्वदा के लिये समाप्त हो गए। इस्लामी जगत में उन का नाम व निशान तक शेष न रहा। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) के शुभागमन से पहले यहूदी और ईसाई , दोनों ही अरबों को मार्ग पर लाने के अनेकों प्रयास कर चुके थे जो सब के सब बेकार गये। लेकिन हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) की चमत्कारी शिक्षाओं की बरकत से समूचा अरब समाज

आपसी शत्रुताएं और भेदभाव भुलाकर परस्पर ऐसे घुलमिल गया जैसे दूध में शक्कर। हज़रत पैग़म्बर–श्री का यह बेसिाल कारनामा विश्व–इतिहास का एक जीवन्त चमत्कार है।

## हज़्रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की शांतिमय शिक्षाओं पर एक विहंगम दृष्टि

क़ुर्आन शरीफ़ का कथन है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ
شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

"हे मानव–जाति ! हम ने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से उत्पन्न किया। फिर जीविका की तलाश में तुम धरती के विभिन्न भगों में फेल गए। भौगोलिक तथा मौसमी असमानताओं के कारण तुम ने अलग अलग क़बीलों और जातियों का रूप धारण कर लिया। पहाड़ी इलाकों के लोगों का रहन सहन मैदानी इलाके वालों से भिन्न हो गया। समुद्र या समुद्र–तट के निकट रहने वालों की आदतें थलवासियों से बिल्कुल अलग हो गयीं। पूरब और पश्चिम के मौसमी अन्तर ने रंगों का भेद पैदा कर दिया। इस अलगाव से भाषाओं में भी अन्तर आगया।" (क़ुर्आन ४६ : १३ , भावार्थ )

इन अन्तरों और विशेषताओं के बावजूद इन्सान की ' ***फ़ितरत*** ' ( = स्वभाव , प्रकृति ) न बदली । वह हर अवस्था में इन्सान ही रहा , देश और काल उसकी ' फ़िरत ' को परिवर्तित न कर सके :

فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ

"ईश्वर की प्रदान की हुई ' फ़िरत ' (प्रकृति) , जिस पर उस ने इन्सानों को पैदा किया , उस को काल और देश नहीं बदल सकते।" (क़ुर्आन ३० : ३०)

रहा श्रेष्ठता का प्रश्न , तो याद रखो कि महान बनने के लिये एक ही अटल नियम है :

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

"अल्लाह की दृष्टि में सर्वाधिक श्रेष्ठ एवं महान वही व्यक्ति या समाज है जो कर्तव्य मार्ग पर सर्वाधिक सुदृढ़ हो।" (क़ुर्आन ४६ : १३)

अतः वास्तविक श्रेष्ठता या महानता का संबध किसी जाति विशेष , वर्ण विशेष , कुल विशेष या देश विशेष से नहीं। यह सिद्धांत बुद्धिसंगत भी है और सार्वभौमिक भी। वह महान पैगम्बर जिसको दुनिया की सभी कौमों के सूधार और प्रशिक्षण के लिये भेजा गया उस को मानवसमाजों के प्रचलित मतमतांतरों का ज्ञान भी दिया गया। जिस प्रकार जातिमूलक श्रेष्ठता का सिद्धांत हानिकारक और सूधार योग्य है , उसी प्रकार वर्ण (रंग) और भषा मूलक अभिमान भी हानिकारक और सूधार योग्य है। फरमाया :

وَمِنْ اٰيَاتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ
وَاَلْوَانِكُمْ اِنَّ فِیْ ذَالِکَ لَاٰيَاتٍ لِّلْعَالَمِيْنَ ٥

"ज्ञानीजनों की ज्ञानवृद्धि के लिये आकाशों और धरती की संरचना में , और लोगों की बहुविध भाषाओं में , और उन के रंग--रूप की विविधताओं में प्रभु की चमत्कारयुक्त निशानियाँ ही निशानियाँ हैं। अर्थात् इन नानाप्रकार की भिन्नताओं में ज्ञानीजनों को प्रभु का अद्भुत तंत्र और एक विराट प्रयोजन नज़र आता है।"(कुर्आन ३० :२२ भावार्थ )

इस विशाल ब्रह्मांड के विविध सृष्टिवर्गों में इतनी असमानताएं , इतने भेद और इतने अन्तर हैं कि उन पर पार पाना असंभव है। परन्तु इतने असंख्य अन्तरों के बावजूद सृष्टि के विभिन्न अंगों में एक अपर्व तालमेल और समन्वय पाया जाता है। इसी समन्वय और तालमेल के फलस्वरूप संपूर्ण जगत का कार्य--व्यवहार सुचारू ढंग से चल रहा है। जैसे जैसे ज्ञानीजनों को सृष्टिविभगों का ज्ञान होता जाता है वैसे वैसे उनके ज्ञान--प्रज्ञान में वृद्धि होती चली जाती है। इस से भी बढ़कर यह कि उनपर ईश्वर की महिमा , उस की शान , उस का प्रताप अभिव्यक्त हो जाता है। ऐसे ही ज्ञानीजनों के बारे में कुर्आन शरीफ़ कहता है :

يَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

"ये वही सौभाग्यशली लोग हैं जो आकाशों और धरती की उत्पत्ति एवं संरचना पर गंभीर चिन्तनमनन करते हैं ताकि प्रज्ञान और ईश्वरानुभूति जैसी बहुमूल्य दौलत प्राप्त कर सकें।" (कुर्आन ३ : १६१ भावार्थ)

कुर्आन शरीफ़ ने जिस तरह भाषाओं और अन्य विविधाओं की चर्चा की है उसी तरह पूरब और पश्चिम वासियों के भेदों का ज़िक्र भी किया है , फ़रमाया :

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَرَبُّ الْمَغْرِبِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا

" तुम्हारा पालनहार—स्रष्टा वही है जो पूरबी दुनिया के निवासियों का रचयिता और प्रतिपालक है , और वही पश्चिमी दुनिया के निवासियों का भी रचयिता और प्रतिपालक है। उस के सिवा और कोई सृष्टिकर्ता या पालनहार नहीं। अतः तुम सब उसी को अपना कार्यसाधक बनाओ।"

( कुर्आन ७३ : ९ भावार्थ )

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ

यही बात अन्यत्र यों भी कही गई है :

" पूरब वाले और पश्चिम वाले — दोनों परमात्मा की सृष्टि हैं , दोनों उसके वश में हैं , दोनों को उसने शारीरिक और आध्यात्मिक क्षमताएं प्रदान कर रखी हैं , दोनों का एकसमान पालन पोषण हो रहा है। यही वजह है कि दोनों ही जगह विद्वान , बुद्धिमान , सन्तमहात्मा और धर्मपरायण लोग पाये जाते हैं।" (कुर्आन २ : ११५ भावार्थ)

ऐसी परिस्थिति में एक दूसरे के साथ नफरत करना , या अनादर और घृणा की दृष्टि से देखना कहाँ तक उचित और न्यायसंगत है ? इसी लिये फ़रमाया :

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ

"कोई क़ौम , कोई जाति दूसरी क़ौम या दूसरी जाति को तुच्छ जानकर उसका तिरस्कार न करे। क्योंकि हो सकता है कि जिन का तिरस्कार किया जाता हो वही घृणाकर्ताओं से श्रेष्ठ और उत्तम हों।"(कुर्आन ४९ :११)

# हज़रत पैग़म्बर—श्री का अन्तिम ' *खुतबा* '(धर्मोपदेश)

***"हुज्जतुल् विदाअ"*** (विदाई हज) के परम शुभ एवं ऐतिहासिक अवसर पर हज़रत पैग़म्बर—श्री ( सल्ल॰) ने हज पर आये हुए एक लाख बीस हज़ार व्यक्तियों के पावन समूह को संबोधित कर यह धर्मोपदेश दिया :

لَا فَضْلَ لِعَرَبِيٍّ عَلٰى عَجَمِيٍّ وَ لَا فَضْلَ لِعَجَمِيٍّ عَلٰى
عَرَبِيٍّ وَ لَا لِاَسْوَدَ عَلٰى اَحْمَرَ وَ لَا لِاَحْمَرَ عَلٰى اَسْوَدَ
اِلَّا بِالتَّقْوٰى

"हे लोगो ! ध्यानपूर्वक सुनो : ' किसी अरब को किसी ग़ैर—अरब पर कोई प्रधानता प्राप्त नहीं , और न किसी ग़ैर—अरब को किसी अरब पर प्रधानता प्राप्त है। किसी काले को किसी गोरे पर कोई प्रधानता प्राप्त नहीं , और न किसी गोरे को काले पर कोई प्रधानता प्राप्त है। प्रतिष्ठा का एकमात्र आधार

कर्तव्यनिष्ठा और धर्मपरायणता है। इस के अलावा प्रतिष्ठा प्राप्ति का और कोई साधन नहीं।"

ये जीवनदर्शन के वे अनमोल सूत्र हैं जिनकी आज पश्चिमी देशों को सर्वाधिक आवश्यकता है। आज भी दुनिया इस कल्याणकारी दिव्य सन्देश से बेखबर ही है। प्रगति के अनुचित अभिमान और अहंकार के नशे से चूर ये जातियां स्वयं को दूसरों से उत्तम समझती हैं। ये लोग कमज़ोरों पर अत्याचार करना अपना अधिकार समझते हैं। उनकी धनसंपति को अन्यायपूवक हथियाने या उन के मूलाधिकारों को पाँव तले रौंदने से ज़रा नहीं हिचकते।

जर्मनी के हिटलर ने यह घोषणा की थी कि जर्मन क़ौम सब मनुष्यजातियों से उत्तम है। इस अवैज्ञानिक मान्यता को अपना कर उस ने अपनी संपूण जाति को गुमराह कर दिया , जिस का भयानक परिणाम द्वितीय महायुद्ध के रूप में दुनिया के सामने आया। इस महायुद्ध की हृदय–विदारक घटनाओं से लोग खूब वाकिफ हैं।

अंग्रेज़ क़ौम पर भी नैश्नलिज़्म (राष्ट्रवाद) का भूत सवार है। ये लोग किसी भी अन्य जाति या क़ौम को उपेक्ष्य समझते हैं , एतएव उन के सामने घमंड और अकड़बाज़ी दिखाने के आदी हैं। पूरब की जिस जिस जाति या क़ौम पर अंग्रेज़ों ने अधिकार जमाया , उस के दिल व दिमाग में यह बात डाल दी कि अंग्रेज़ क़ौम आकाश से उतरी हुई क़ौम है , और यह कि अंग्रज़ों के अधनिस्थ जातियाँ उन की धूल के बराबर भी नहीं। भारत , पाकिस्तान , और अफ़रीका के वासियों के अधिकारों का अंग्रज़ों ने शोषण किया , उन की मानमर्यादा को बुरी तरह क्षतिग्रस्त किया। इंगैंड में बसे हुए एशियाई लोगों के साथ आज भी बड़ा दुर्व्यवहार किया जाता है। दक्षिणी अफरीका के मूलनिवासियों के साथ गोरों का व्यवहार भी कुछ कम अपमानजनक और निर्दयतापूण नहीं। जिस का परिणाम अशांति और अराजकता है।

कहने को अमरीका वाले " लोकतन्त्र " का ढोल पीटते हैं , और अपने देश को ' ईश्वर की भूमि ' कहते हैं। परन्तु दो करोड़ हबशी , जो युगों से अमरीकी नागरिक माने जा चुके हैं , और जिन का प्रमुख धर्म भी ईसाई धर्म ही है , गोरी चमड़ी वाले अमरीकनों के तिरस्कारात्मक व्यवहार से विह्वल और त्रस्त हैं। हालांकि अमरीका को आधुनिक जगत का सब से ज्यादा सुसभ्य और सुशिक्षित राष्ट्र होने का दावा है। ज्ञानवान् होने के बावजूद उन्हों ने इन्सानी समाज के एक बड़े वर्ग के प्रति इस कदर बेतुकी एवं अमानवीय धारणाएं मन में बसा रखी हैं।

ये दयनीय परिस्थितियाँ यही याचना करती हैं कि संसार के समस्त वासी हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के उस धर्मोपदेश पर अमल करें जो उन्हों ने अपने विदायी हज के परमशुभ अवसर पर दिया था। यही वह एकमात्र साधन है जिसके फलस्वरूप दुनिया की बहुविध क़ौमों और जातियों के बीच सौहार्द और भाईचारे का

स्थाई रिशता क़ायम हो सकता है। और दुनिया को वह शांति प्राप्त हो सकती है जिस के लिये वह तड़प रही है। इसी संदर्भ में क़ुआन शरीफ़ फ़रमाता है :

وَ لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِىٓ اٰدَمَ

"हम ने संपूर्ण मानवजाति को माननीय और इज़्ज़तदार बनाया।"

(क़ुर्आन १७ : ७०)

यह आयत जहां मानवसमाज के पिछड़े , पददलित तथा शोषित वर्ग का दर्जा और मान बढ़ाती है , वहीं अभिमान और अहंकार से मदमस्त व्यक्तियों को उन का वास्तविक स्थान याद दिलाती है। ईश्वर के इस कथनानुसार राजा और किसान समान रूप से आदरणीय हैं। स्वामी हो या दास , पंडित हो याशूद्र , धनवान हो या निर्धन , ज्ञानी हो या अज्ञानी , स्त्री हो या पुरुष , गोरा हो या काला , यहूदी हो या हिंदू , ईसाई हो या पारसी , सिख हो या बौद्ध , मुसलमान हो या गैर–मुस्लिम –– सब के सब समान रूप से माननीय हैं। दुसरे शब्दों में यह कि दुनिया में बसने वाला मानव नामक जीव आदरणीय और इज़्ज़तदार है , फलतः उसका हर हालत में सम्मान होना ही चाहिये। यह अनमोल सिद्धांत विश्वशांति और अन्तराष्ट्रीय भाईचारे की सुखद स्थापना के लिये परमावश्यक है।

"हम ने संपूर्ण मानवजाति को माननीय और इज़्ज़तदार बनाया" –इस आयत में उन लोगों की भ्रांत धारणाओं का भी खंडन है जो मनुष्य को जन्मजात पापी मानती हैं। आदम की सन्तान (=मानवजाति) को पापी ठहराना परले दरजे का अपमान और तिरस्कार है। हमारा रोज़ का अनुभव भी इस मान्यता को ग़लत साबित करता है। वह कौन सी क़ौम , कौन सी जाति है जिस में सन्त–महात्माओं का उदय नहीं हुआ ? हिन्दुओं के चारों वर्णों में साधु , सन्त और पुण्यात्माएं समान रूप से उत्पन्न होती रही हैं। और फिर ऐसे ऐसे देशभक्त तथा धर्मभीरू भी समान रूप से पाये जाते हैं जो अपने देश या जाति के लिये अपना तन–मन–धन अर्थात् सर्वस्व बलिदान कर देते हैं। अतः उन की यह मान्यता सत्य नहीं कि मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मों के फलस्वरूप ही ऊंचे या नीचे वर्णादि में जन्म लेता है , या यह कि पूर्वकृत कर्मों के अनुसार ही अच्छी या बुरी प्रवृत्तियाँ लेकर पैदा होता है। जन्मजात पापी होने के कारण ही आवागमन के दुष्चक्र में फंसता और हज़ारों लाखों योनियों में से गुज़रता है।

ईसाइयों में भी शुरू दिन से पण्यात्माएं पैदा होती रही हैं। उन में ऐसे लोग मौजूद हैं जो झूठ और बेईमानी के करीब तक नहीं फटकते , और ऐसे लोग भी हैं जो न्यायशीलता और दानवीरता का प्रदर्शन करने में कोसों आगे निकल जाते हैं। सो यह कहना कैसे सही है कि मनुष्य जन्मजात पापी है ? हालांकि स्वयं बाईबिल में लिखा है :

" परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में रचा "। ( उत्पत्ति १ : २६,२७ )

यह पुराने नियम का वाक्य है , नये नियम में यही बात प्रकारांतर से यों दोहरायी गयी है :

"आदम परमेश्वर का पुत्र था।"

अर्थात परमेश्वर ने अपने समस्त सद्‌गुणों का प्रतिबिम्ब उस में रख दिया। यदि परमात्मा दयालु–कुपालु है तो मनुष्य के हृदय में भी दयाभाव पाया जाता है। यदि परमात्मा क्षमाशील है तो माँ–बाप भी अपनी सन्तान की अनेकों गलतियाँ माफ करते रहते हैं। शासक गण अपने जन्मदिन पर कैदियों की सज़ा माफ कर उन्हें आज़ाद कर देते हैं। परमेश्वर ने अपने बन्दों की सुखसुविधा केलिये बेशुमार साधन जटा रखे हैं , मनुष्य भी अपना धन ग़रीबों के कल्याण हेतु व्यय करते रहते हैं। हज़रत ईसा (अ॰स॰) भी यही शिक्षा देते हैं कि तुम अपने क़सूरवार को क्षमा करो ताकि परमेश्वर तुम्हारे क़सूर माफ करे। ज्ञात हुआ कि बाइबिल के दोनों नियमों में यही सीख मौजूद है कि मनुष्य में परमेश्वर के दिव्यगुणों का प्रतिबिम्ब पाया जाता है। अतः इस वास्तविकता के रहते यह कहना कि मनुष्य जन्मजात पापी है , एकदम गलत और बुद्धिविपरीत है। जिस ज़ोर व शोर से ईसाई लोग मनुष्य को पापी घोषित करते हैं , उसी तीव्रता से हज़रत ईसा (अ॰स॰) इस मान्यता का खंडन करते हैं। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं :

"स्वस्थ मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं , पर रोगियों को होती है। मैं धार्मिकों को नहीं , पर पापियों को बुलाने आया हूँ कि वे हृदय–परिवर्तन करें।" ( लूका ५ : ३१,३२ )

साबित हुआ कि हज़्त ईसा (अ॰स॰) के कथनानुसार लोग जहाँ रोगी (=पापी) होते हैं , वहाँ स्वस्थ (=नेक) भी होते हैं। इन्ही का एक और कथन यों है :

" परमेश्वर दुर्जन और सज्जन दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है , तथा धार्मिक और अधार्मिक दोनों पर वर्षा करता है।" (मत्ती ५ : ४५ )

बच्चों को निर्दोष घोषित करते हुए फरमाते हैं :

"बालकों को मेरे पास आने दो , उन्हें मना न करो , क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है।" (मत्ती १६ :१४ )

इस वाक्य से यही सिद्ध हुआ कि बच्चा निर्दोष अवस्था में जन्म लेता है , अतः मनुष्य जन्मजात पापी नहीं। और कहा है कि धार्मिक बनो –– " क्योंकि परमेश्वर का

राज्य खाने पीने में नहीं , वरन् धार्मिकता में है (रोमियों १४ : १७ )।" और कहा कि परमेश्वर अच्छे कर्मों का अच्छा बदला देता है। इस संदर्भ में एक मिसाल देते हुए कहा कि एक गरीब बुढ़िया के पास दो दमड़ियां थीं , उस ने उन को प्रभु के मार्ग में दान कर दिया। प्रभु ने उसको इस का बहुत बड़ा प्रतिफल दिया ( मरकूस १२ : ४२,४३ )। एक व्यक्ति को संबोधित कर हज़रत ईसा (अ.स.) ने कहा : "यदि तू पूर्ण होना चाहता है तो अपनी संपत्ति बेचकर दरिद्रों को दे डाल , और स्वर्ग में तुझे धन मिलेगा , तब आ और मेरा अनुयायी बन (मत्ती १६ : २१ )।" एक और जगह कहा है : " में तुम से सच कहता हूँ : कर लेनेवाला और वेश्याएं परमेश्वर के राज्य में तुम से पहले प्रवेश कर रहे हैं (मत्ती २१ : ३१ )।" मालूम हुआ कि जिस तरह मनुष्य जन्म के समय स्वस्थ शरीर लेकर आता है , उसी प्रकार वह स्वस्थ आत्मा भी लेकर आता है। जिस प्रकार उस के शरीर को कभी रोग लग जाता है , और इलाज करने पर तन्दुरुस्ती लौट आती है , उसी प्रकार जब मनुष्य की आत्मा को कभी रोग लग जाता है तो ' *तौबा* ' (=हृदयपरिवर्तन ) से उस की आध्यात्मिक सेहत वापस आ जाती है ( देखो लूका १५ :७ )। इस बारे में हज़रत ईसा (अ.स.) ने फरमाया कि शारीरिक और आध्यात्मिक मामलों में परमेश्वर का एक ही नियम है। उन के अपने शब्द हैं : " ओ निर्बुद्धियो ! जिस ने बाहरी भाग बनाया है , उस ने क्या भीतरी भाग नहीं बनाया ? (लूका ११ : ४० )।" जिस परमेश्वर ने शरीर बनाया है उसी ने हृदय बनाया है , अर्थात् शरीर और हृदय को रचने वाला एक ही परमेश्वर है। इस लिये ज़रूरी है कि शरीर और आत्मा का नियम एक जैसा ही हो।

हिन्दू और ईसाई , दोनों मनुष्य को पाप में सना बताते हैं। परन्तु हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल.) ने इस धारणा को ही ग़लत और निराधार बताया , फरमाते हैं :

وَ لَقَد كَرَّمنَا بَنِى آدَمَ

" परमेश्वर ने संपूर्ण मनुष्य—जाति को माननीय और इज़्ज़तदार ठहराया ( क़ुर्आन १७ : ७० )।"

सो चाहिये कि हर इन्सान का आदर और सम्मान हो , किसी भी मनुष्य को अछूत , नीच , तुच्छ या पापी कह कर उस का अपमान न किया जाये। यह प्रत्यक्ष तथ्य और खुली साक्षियां यही सिद्ध करती हैं कि हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल.) का व्यक्तित्व सर्वसंसार केलिये साक्षात एक दिव्य " ***रहमत*** " (दयालुता,वरदान) था।

# परमपद व मोक्षलाभ

परमपद या मोक्षलाभ का दारोमदार किसी विशेष वर्ण , जाति , कुल , या सम्प्रदाय पर नहीं। मुक्ति परिणाम है पुण्यकर्मों का। मुसलमानों और अन्य धर्मों के ' ग्रन्थ -धारियों '(=अनुयायियों ) को संबोधित कर प्रभु कहता है :

لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَ لَا اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ

"हे मुसलमानो ! मोक्षलाभ न तो तुम्हारी मनोकामनाओं के अनुसार है और न 'अहले किताब' यानि पूर्ववर्ती दिव्य–ग्रन्थों के अनुयायियों की आकांक्षाओं के अनुसार। उस की प्राप्ति एक निश्चित एवं विश्वव्यापी नियम के अधीन है। और वह नियम यह है कि जो मनुष्य बुरे काम करेगा वह उसका फल अवश्य भोगेगा।"(कुर्आन ४ : १२३)

وَ مَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ٥

" जो भी प्रभु पर आस्था रख कर अच्छे कर्म करेगा , मर्द हो या औरत , वह स्वर्ग में दाखिल होगा , और उन के साथ ज़रा भर भी अन्याय न होगा।"

(कुर्आन ४ : १२४)

यह दिव्य नियम बता कर हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने अपने अनुयायियों पर यह तथ्य स्पष्ट करदिया कि केवल मुसलमान कहलाने मात्र से न तो मुक्ति ही प्राप्त हो सकती है और न ही जीवन में कोई सुखद परिवर्तन। मोक्षलाभ का एक ही साधन है , और वह है धर्मपरायणता। यही दिव्य नियम उन पर भी लागू होगा जिन के पास कोई पूर्ववर्ती दिव्य ग्रन्थ हो। एक और आयत में फ़रमाया है :

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا لَا يَسْتَوٗنَ

"क्या वह जो अल्लाह के आदेशों को मानने वाला है , उस जैसा हो सकता है जो आज्ञाकारी न हो ? वे कदापि एकसमान नहीं।" (कुर्आन ३२ : १८)

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) स्वयं अपने बारे में घोषणा करते हैं

اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ

" यदि मैं भी अपने पालनहार–स्रष्टा की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक बड़े भारी दिन की यातना का भय है।"(कुर्आन १० : १५ )

अल्लाह ने कुआन शरीफ़ में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के घर वालों के बारे में कहा है कि यदि वे कोई अपराध करें तो उन को दुगुना दण्ड मिलेगा (कुर्आन

३३ : ३०)। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰०) ने एक बार अपनी सगी बूआ हज़रत सफ़िया और अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा ( अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो ! ) को संबोधित कर फ़रमाया :

اِئتُونِیْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ بِاَعْمَالِکُمْ وَلَا بِاَنْسَابِکُمْ
لَا اَمْلِکُ لَکُمْ مِنَ اللّٰہِ شَیْئاً وَلَا اغنی عَنْکُمْ
مِنَ اللّٰہِ شَیْئاً

" **क़ियामत के दिन मेरे पास कर्मों की राशि लेकर** आना , यह न कहना कि मैं मुहम्मद (सल्ल॰) की बूआ या बेटी हूँ। वहां मेरा कोई इख़्तियार न होगा , और न मैं तुम्हारे काम आ सकूँ गा।"

इसी नियम को प्रकारांतर से यों प्रतिपादित किया गया है :

مَنْ عَمِلَ صَالِحاً مِن ذَکَرٍ اَوْ اُنْثٰی وَھُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْیِیَنَّہٗ حَیٰوۃً طَیِّبَۃً

" जो कोई प्रभु पर आस्था रखते हुए अच्छे कर्म करेगा , मर्द हो या औरत , हम उस के जीवन को पावन और सार्थक कर दें गे।" (क़ुर्आन १६ : ६७)

अच्छे कर्मों से मन को संतोष और बुरे कर्मों से अशांति एवं लज्जा महसूस होती है। इस संदर्भ में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

اَلْاِثْمُ مَا حَاکَ فِیْ نَفْسِکَ وَ تخاف اَنْ یَّطَّلِعَ النَّاس عَلَیْہِ

" पाप–कर्म से दिल में खटका पैदा होता है , और डर लगा रहता है कि कहीं लोगों को मेरे इस अपराध की सूचना न मिल जाये।"

इसी नियम का दूसरा भाग यह है :

اَلْبِرُّ مَا اطْمَانَ اِلَیْہِ نَفْسُکَ

" नेकी से मन को शांति और प्रसन्नता प्राप्त होती है।"

जब हम किसी नंगे आदमी को कपड़े पहना देते हैं , या भूखे आदमी को भोजन करा देते हैं , तो हम को एक अद्भुत शांतिमय आनन्द का अनुभव होता है। यदि हम किसी कमज़ोर या बलहीन व्यक्ति को थपड़ मार देते हैं तो हम खुद–ब–खुद लज्जित हो जाते हैं। तात्पर्य यह कि अपराध करने वाला हर व्यक्ति शरमंदगी महसूस करता है। हर वह व्यक्ति जो जनकल्याण का कार्य करता है वह एक विचित्र खुशी ,

एक अद्‌भुत संतुष्टि का अनुभव करता है। ये वे तथ्य हैं जो दुनिया के प्रत्येक इन्सान के अनुभव में आते हैं। यह वह ईश्वरीय नियम है जो मनुष्य की *'फ़ितरत'* (प्रकृति) में कार्यरत है। हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) की अन्य शिक्षाओं की भांति आप की यह शिक्षा भी अपूर्व और विश्वव्यापक है।

# संसदीय सरकार

क़ौमी यानि जनता के मशवरे से सरकार चलाने की प्रणाली जिस महापुरुष ने सर्वप्रथम चलाई वे हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ही थे। शासन की यह प्रणाली बड़ी मंगलमय है। इस से संपूर्ण राष्ट्र के दिलों में अपनी सरकार के प्रति रुचि और निष्ठा पैदा हो जाती है। अतः वे मिलकर राष्ट्र की मज़बूती केलिये पूरी कोशिश करते हैं और हर तरह की क़ुर्बानी देने के लिये तैयार हो जाते हैं। इस विषय में हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) को यह आदेश मिला :

وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ

" हे मुहम्मद ! शासन के मामले में अपनी क़ौम से सलाह—मशवरा कर लिया करो।" (क़ुर्आन ३ : १५६)

और मुसलमानों के बारे में फ़रमाया है

وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ

" और मुसलमानों की विशेषता यह होनी चाहिये कि वे शासन या हकूमत के मामलों को आपसी विचार विमर्श से तय कर लिया करें।" (क़ुर्आन ४२ : ३८)

जिस तरह हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ने अपने जीवन काल में क़ौमी विचार—विमर्श से सरकार चलाना ज़रूरी समझा , उसी तरह हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) के बाद आपके ख़लीफ़ों (उत्तराधिकारियों) —— हज़रत अबूबक्र , हज़रत उमर , हज़रत उस्मान , हज़रत अली ( अल्लाह उन सब से राज़ी हो ! )—— ने भी सरकार मशवरे से ही चलाई। ख़लीफ़ों के दौर में इस्लामी राज्य का विस्तार बहुत अधिक हो गया। ईरान , मिस्र , शाम , लिबिया , अल्—जज़ायर , टियूनिस , मोराको , स्पेन इत्यादि देश मुसलमानों के अधिकार में आ गए। इन सब देशों में संसदीय सरकार क़ायम की गई। शासन की यही प्रणाली धिरे—धिरे यूरोप वालों ने अपना ली। यहाँ यह बता देना भी ज़रूरी है कि पश्चिमी देशों के राजाओं ने शासन की यह प्रणाली स्वेच्छा से न अपनाई , बल्कि प्रजा ने मुद्दतों तानाशही के खिलाफ़ संघर्ष करके इस प्रणाली

को जारी किया। हाँ सर्वसंसार में एक ही शासक ऐसा हुआ है जिस ने स्वेच्छा से क़ौम को सरकार सौंप दी। और वे हैं हज़रत पैग़म्बर–श्री मुहम्मद (सल्ल॰)।

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) को अपनी इच्छाओं और भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण हासिल था। इच्छाओं और , भावनाओं पर काबू रखना बड़ा ही कठिन कार्य है। शाही ठाठ बाठ , शाही ऐश व आराम , शाही ख़ज़ाना , शाही अधिकार – इन सब को अपने हाथों जनता के हवाले कर देना कठिनतम कार्य है। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने इन का बलिदान देकर न सिर्फ़ अपनी क़ौम की प्रतिष्ठा को गौरवान्वित किया बल्कि संसार की अन्य जातियों के सामने भी संसदीय सरकार का एक आदर्श नमूना प्रस्तुत कर दिया। जिन हालात और परिस्थितियों में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने संसदीय सरकार स्थापित की वे उस की स्थापना के बिल्कुल प्रतिकूल थे । उस समय ईरान का सम्राट निरंकुश और स्वेच्छाचारी था , शाम देश के राजा का भी यही हाल था। मिस्र का ' फिरऔन ' अपनी निरंकुशता और स्वेच्छाचार के मामले में सब से आगे था। ऐसे ही आकर्षक वतावरण में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) संसदीय सरकार की स्थापना करते हैं , वह भी अरब जाति के मध्य , जो इस तरह की शासन प्रणाली के बारे में कभी सपने में भी सौच न सकते थे। वे तो हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के एक इशारे मात्र पर जान व माल निछावर कर देने के आदी थे। ऐसी परिस्थिति में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) का संसदाय सरकार स्थापित करना स्वयं में एक महा बलिदान ही नहीं , बल्कि आपका यह कदम आप के बेमिसाल विवेक और अद्भुत बुद्धिमत्तता का भी परिचायक है। कितने खेद की बात है कि यूरोप ( कभी कभी पूरब भी ) इसी तेजस्वी मानवतावादी महापुरुष के विरुद्ध असत्य और निराधार बातों का प्रचार करता रहता है।

# शासकों के लिये आदर्श और नमूना

बादशाहत या तानाशाही में जनकोश का बहुत बड़ा हिस्सा बादशाहों और उन के रिश्तेदारों पर ख़र्च होता रहता है। यह स्वार्थपरता उस प्रजातन्त्र की आत्मा के एकदम विरुद्ध है जिस की स्थापना हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने की थी। बादशाह होते हुए भी आप एक साधरण मनुष्य का सा सादा जीवन जिये। आप का लिबास , आप का खान पान , और आप का रहन सहन बिल्कुल सरल व सादा था। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) स्वयं कहा करते थे :

اَنَا اَجْلِسُ كَمَا يَجْلِسُ الْعَبْدُ وَ اٰكُلُ كَمَا يَاْكُلُ الْعَبْدُ

"मैं उसी तरह बैठता हूँ जिस तरह अल्लाह का कोई सेवक बैठता है , और मैं उसी तरह भोजन करता हूँ जिस तरह अल्लाह का कोई सेवक भोजन करता है।"

हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ग़रीबों के बीच घुलमिल कर बैठते थे। आप के ग़रीब साथी इस बेतकल्लुफ़ सतसंग पर नाज़ किया करते , और प्रायः गर्व से कहते :

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلى الله عليه و سلم يَقعد مَعَنَا
وَ يَدْنُوا مِنَّا حَتّٰى تَمَسّ رُكْبَتُهٗ رُكْبَتَنَا

"हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) हमारे संग घुलमिल कर बैठते , यहां तक कि आप का घुटना हमारे घुटने से स्पर्ष करता।"

तात्पर्य यह कि हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ने न तो राजाओं—महाराजाओं जैसा लिबास ही पहना और न नानाप्रकार के व्यंजन और पकवान अपने दस्तरखान पर आने दिये। न महल ही बनवाये , न सेरगाहें। और न अपने क़बीले या जातिजनों के लिये ख़ज़ाने का रुपया पानी की तरह बहाया , और न अपने सगे संबंधियों के लिये जागीरें मुक़र्रर कीं। आप कहा करते थे :

اَلْفَقْرُ فَخْرِی

" बादशाहत के होते हुए भी सादा और फ़कीराना ज़िन्दगी बसर करना ही मेरा गौरव है।"

प्रजातन्त्र का इस से बढ़कर अमली नमूना और क्या हो सकता है ? जीवन तो जीवन हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) की मृत्यु भी शासक वर्ग के लिये एक अपूर्व नमूना है। हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) की धर्मपत्नी हज़रत आइशा (अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) कहती हैं :

"हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) को [illegible]रों में लपेट कर मट्टी के हवाले कर दिया गया। आप के पवित्र शव पर न तो कमीज़ थी और न ' ***अमामा*** ' ( पगड़ी )। हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) के दफनाने का कार्यक्रम उतना ही सादा था जितना किसी ग़रीब से ग़रीब इन्सान का हो सकता है। उन के पवित्र शव के लिये न तो संदूक ही तैयार किया गया , और न ही कबर की तैयारी में कोई ख़ास विशेषता बरती गयी। धरती में कबर खोदी गई और

उस में आप का पवित्र शव रख दिया गया। कबर के निशान हेतु ऊपर से लंबाईवार ऋऊँट के कूबर की भांति मट्टी ढेर कर दी गई , उस पर कंकर बिछाकर पानी छिड़क दिया गया — और बस ।"

सारांश यह कि हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) का पवित्र जीवन , आप की मृत्यु — दों ही में शासक वर्ग और प्रजा वर्ग के लिये महान् आदर्श हैं।

# मुस्लिमों और ग़ैरमुस्मिों पर शासन

हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि इस्लामी राज्य में मुसलमान और ग़ैरमुसलमान के अधिकार बराबंर हैं। सिवाय इसके कि ग़ैरमुस्लिम के साथ अल्लाह और ' रसूल ' का यह ' ***अहद*** '(=वचन , संविदा) है कि उस के जान व माल , धार्मिक स्वतंत्रता तथा मानमर्यादा की विशेष रूप से रक्षा की जाए गी। इस राजनैतिक वचन के लिये ' ***ज़िम्मतुल्लाह व ज़िम्मतुर्रसूल*** ' (=अल्लाह और उस के रसूल की गारंटी या ज़मानत) के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। खाली '***अहद***' शब्द काफी नहीं समझा गया , बलिक इस वचन को ' ***ज़िम्मतुल्लाह*** ' और ' ***ज़िम्मतुर्रसूल*** ' की पावन संज्ञा दी गयी , ताकि शासकवर्ग को भलिभांति ज्ञात होजाये कि उन्हें ग़ैरमुस्लिम प्रजा के हितों के मामले में असाधारण सावधानी बरतना होगी।

हज़रत उमर (अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) जैसा तेजस्वी ख़लीफ़ा भी ग़ैरमुस्लिमों के मामले में ईश्वर से अत्यधिक भयभीत रहता था। उन्हों ने मरते समय अपने बाद आने वाले ख़लीफ़ा को इन ऐतिहासिक शब्दों में वसीयत की :

أُوْصِيهِ بِذِمَّةِ اللّٰهِ وَ بِذِمَّةِ رَسُوْلِهٖ اَن يُّوَفّٰى لَهُمْ
بِعَهْدِهِم وَاَن يُّقَاتَلَ مِنْ وَرَائِهِم وَ اَن لَا يُكَلَّفُوْا
فَوْقَ طَاقَتِهِمْ

"मैं अपने उत्तराधिकारी को ग़ैरमुस्लिमों के बारे में यह वसीयत करता हूँ कि उन के साथ अल्लाह और उस के रसूल का ' अहद ' (वचन) है। इस वचन को पूर्ण किया जाये , उन की जान माल की रक्षा की जाये , उनके बचाव केलिये अगर युद्ध लड़ना पड़े तो युद्ध लड़ा जाए , उन से उन की शक्ति से अधिक काम न लिया जाये।"

इतिहास के ये उज्वल एवं अनमिट तथ्य यही साबित करते हैं कि हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ने स्वयं , और उनके बाद आप के ख़लीफ़ों ने ग़ैरमुस्लिमों के साथ सच्चा मानवोचित व्यवहार किया।"

ग़ैरमुस्लिम प्रजा के हितों और अधिकारों की रक्षा के लिये हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने मुसलमान हाकिमों को यहां तक कह दिया :

مَنْ قَتَلَ مُعَاهِدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ

" जो मुसलमान ' ***मुआहिद*** ' (=वह ग़ैरमुस्लिम जिस की रक्षा के लिये इस्लामी हकूमत वचनबद्ध हो) का वध कर दे वह स्वर्ग की सुगंध से वंचित रहेगा।"

और मुसलमानों को विशेष आदेश है :

اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ

"हे मुसलमानो ! अपने वचन , अपने वादे पूरे किया करो।"(क़ुर्आन ५ : १)

आशय यह कि ग़ैरमुस्लिम प्रजा को दिया गया सुरक्षा और धार्मिक स्वतंत्रता का वादा अवश्य पूरा किया जाए , क्योंकि इस संबंध में अल्लाह ज़रूर पूछेगा।

चाहिये कि यूरोप के सभ्य और अत्याधुनिक शासकगण इस पवित्र एवं मंगलमय इतिहास से लाभ उठाएं। पश्चिमी दुनिया के शासकों को जब भी पूर्वी जातियों पर हकूमत करने का मौका मिलता है , तो वे पूरब–वासियों और पश्चिम–वासीयों के साथ कभी एक जैसा व्यवहार नहीं करते। पूरब–वासियों के साथ हमेशा अन्याय और अत्याचार ही करते हैं। ऐसा करते समय वे ईश्वर से भी नहीं डरते।

पश्चिम वालों ने जिस किसी पूर्वी जाति या देश पर अधिकार प्राप्त किया , अपने अत्यंत अन्यायपूर्वक अमानवीय व्यवहार से उन्हें अपना शत्रु बना कर ही छोड़ा। पश्चिमी इतिहास के पन्ने इस कलंक की कालिमा से इस बुरी तरह सियाह हैं कि अब वह कालिख मिटाये नहीं मिटती। २०वीं सदी की पश्चिमी दुनिया को अपने ज्ञान–विज्ञान , तथा अपनी प्रगतिशीलता पर गर्व है। इस प्रगतिशीलता के बावजूद ये लोग पूर्वी क़ौमों के प्रति अच्छा बरताव करने पर आमादा नहीं होते। पश्चिमी क़ौमों को चाहिये कि वे हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की शासन–प्रणाली पर चिंतन–मनन करें। इस प्रणाली ने चौदाह सौ वर्ष पूर्व न्याय और इन्साफ का सर्वोच्च आदर्श कायम किया था। इस परमशुभ प्रणाली के अंतर्गत मुसलमानों और गैरमुसलमानों को केवल समान अधिकार ही नहीं मिले , बल्कि ग़ैरमुस्लिम प्रजा को विशेषाधिकार और रियायतें भी प्रदान की गयीं।

## मिस्र की ईसाई प्रजा के साथ व्यवहार

मिस्र की ईसाई प्रजा के बारे में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) के स्पष्ट आदेशों को यहां नक़ल कर देना अवश्य ज्ञानवर्धक होगा। आप ने फ़रमाया :

سَتَفْتَحُوْنَ مِصْرَ اِسْتَوْصُوا بِاَهْلِهَا خَيْراً فَاِنَّ لَهُمْ ذِمًّا وَّرَحْمًا

"तुम बहुत जल्द मिस्र को पराजित कर लो गे। देखो , मिस्र वालों के साथ अच्छा व्यवहार करना क्योंकि इस्लामी राज्य की प्रजा होने के नाते वे हमारे '***मुआहिद***' करार पायें गे। उन के साथ अच्छे व्यवहार की एक और भी वजह है , और वह यह कि अरब जाति की मूल–माता हज़रत हाजरह (उन पर अल्लाह की शांति वर्षित हो !) मिस्री थीं। इस पवित्र रिश्ते का ध्यान रखना।"

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) के इस पावन आदेश पर मिस्र–विजेता एवं गवर्नर हज़रत अमरू इबन आस ने अक्षरशः अमल किया। उन्हों ने ईसाइयों और कनानी दासों को वही अधिकार प्रदान किये जो मुसलमानों को प्राप्त थे। इस उदार व्यवहार से ईसाई प्रजा के दिलों में संतुष्टि और इतमिनान पैदा हो गया। उन्हों ने महसूस किया कि वे एक असाधारण शांतिमय वातावरण में जीवन व्यतीत करने लगे हैं।

एक अद्‌भुत घटना ने उन्हें और भी प्रभावित किया। हुआ यों कि मुसलमान गवर्रनर के सुपुत्र ने क़बत जाति के एक ईसाई की सरे बाज़ार मारपीट की। मिस्रियों के लिये तो यह एक मामुली सी घटना थी। क्योंकि इस्लामी हकुमत से पहले इस तरह की घटनाएं वहां आये दिन घटती रहती थीं। इस साधारण सी घटना का उन के निकट कोई विशेष महत्त्व न था। लेकिन इस्लाम की दृष्टि में यह अत्याचार था। चुनांचि जब इस घटना की सूचना मदीना पहुँची तो मुसलमानों के ख़लीफा हज़रत उमर (अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) बड़े नाराज़ हुए। उन्हों ने अमरू इबन आस और उन के सुपुत्र को मदीना बुलवाया। और सुपत्र महाशय को सरे आम सज़ा दी , और गवर्रनर को इन शब्दों में डांटा :

مُنْذُ كَمْ تَعَبَّدتُمُ النَّاسَ الَّذِيْنَ وَلَدَتْهُمْ اُمَّهَاتُهُمْ اَحْرَارًا

"तुम ने कब से उन लोगों को गुलाम बनाना शुरू कर दिया है जिन को उन की माताओं ने आज़ाद जना था ?"

इस विलक्षण न्याय को देख मिस्रवासी आश्चर्यचकित हो गए। वे इस बात की कल्पना भी न कर सकते थे कि एक साधारण क़बती ईसाई की खातिर गवर्रनर और उस का सुपुत्र इस तरह तलब किये जायें गे। इस्लामी न्याय ने इस बात की बिल्कुल परवाह न की , कि मिस्र के गवर्रनर को इस तरह तलब करना इस्लामी हकूमत के

अपमान का ज्ञापन बन सकता है। PRESTIGE का भूत सिर्फ़ यूरोप के उन शासकों पर सवार है जो पूरबी जातियों या देशों पर शासन करने का अवसर पाते हैं। इस्लाम ने शासन संबंधी इस दोष का पूरी तरह उन्मूलन कर दिया था। हज़रत उमर (अल्लाह उन से राज़ी हो ! ) की इस बेजोड़ न्यायपरता ने मिस्र वासियों को हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की पावन शिक्षाओं के प्रति आसक्त कर दिया। वे तन , मन और धन से इस्लामी हकूमत के वफ़ादार बन गए। उन में के अधिकतर लोगों ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। और कालांतर में अरबों की भाषा और तौर तरीक़े अपना लिये। और जो लोग ईसाई धर्म पर क़ायम रहे , उन्हों ने भी महसूस किया कि धार्मिक स्वतंत्रता या उन के रहन सहन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता। उन्हों ने यह भी देखा कि उन के मठवासी स्त्री–पुरुषों को उन के मठों और उपासनागृहों में पूजापाठ की पूरी पूरी स्वतंत्रता प्राप्त है।

# यमन के यहूदियों पर शासन

ईसाईयों के बाद अब यमन के यहूदियों के अनुभव की चर्चा की जाती है। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने मुआज़ इबन जबल और अबू मूसा अन्सारी (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो ! ) को यमन का हाकिम नियुक्त किया। जब वे यमन की ओ· ·स्थान करने लगे तो हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने दोनों को संबोधित कर फ़रमाय।

> "तुम दोनों सवार हो जाओ , मैं तुम्हें विदा करने के लिये कुछ दूर पैदल चलूँगा।"

उन्हों ने निवेदन किया :

> "हे अल्लाह के रसूल ! यह कैसे होगा कि हम सवार रहें और आप पैदल चलें ?"

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने फ़रमाया :

> " मेरी इच्छा है कि मैं तुम दोनों को सवार देखूँ , और तुम्हारे साथ कुछ दूर पैदल ही चलूँ। "

शिष्टाचार के मारे वे दोनों सज्जन सवार हो गये , और हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) उन के साथ साथ पैदल चलते रहे। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) उन्हें राजनीति की बातें समझाते जा रहे थे। फ़रमाया :

اَلْاِيْمَانُ يَمَانٍ وَ الْحِكْمَةُ يَمَانِيَّةٌ

> " देखो ! यमन वाले ' ***अहले किताब*** ' (=ईश्वरीय ग्रन्थ के अनुयायी) हैं , अतः सम्माननीय हैं। वे भी परमात्मा के एकत्व में विश्वास रखते हैं , और उन में विवेक भी है।"

और फ़रमाया :

بَشِّرُوْا وَ لَا تُنَفِّرُوْا، يَسِّرُوْا وَ لَا تُعَسِّرُوْا

" प्रजा से ऐसा व्यवहार न करना जिस से उन के दिलों में प्रेम की जगह नफरत पैदा हो जाए। उन के साथ नरमी और प्रेम से पेश आना , कठोर व्यवहार से बचना। प्रजा के लिये सदा आसानियाँ ही पैदा करना कठिनाइयाँ नहीं।"

सफल शासन के यही दो प्रमाणचिन्ह हैं :

१) प्रजा के दिलों में शासन के प्रति प्रेमभाव जागाना ,

२) प्रजा की कठिनाइयाँ दूर कर उन के लिये सूविधाएं पैदा करना।

तत्पश्चात् हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने उन से पूछा :

" तुम निर्णय किस कानून के आधार पर करो गे ? "

मुआज़ इबन जबल ने उत्तर दिया :

"खुदा की किताब (=क़ुर्आन शरीफ़) के आदेशानुसार।"

फरमाया :

" मान लो क़ुर्आन शरीफ़ में तम्हें वह बात न मिल सकी तो ? "

मुआज़ इबन जबल ने कहा :

"उस दशा में अल्लाह के रसूल की *'सुन्नत'* (=व्यवहार रीति) को दृष्टि में रखते हुए।"

पुनः फ़रमाया :

" यदि मेरी 'सुन्नत' में भी इस विषय पर प्रकाश न पड़ सका तो ? "

मुआज़ इबन जबल बोला :

" तब मैं अपने विवेक और बुद्धि से काम लूँगा।"

यह सुन कर हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) बड़े प्रसन्न हुए और मुआज़ को थपकी दी और फ़रमाया :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِی وَفَّقَ رَسُوْلَ رَسُوْلِ اللّٰهِ لِلْهِدَايَةِ هٰذَا

"शुक्र है उस प्रभु का जिस ने अपने 'रसूल' के 'रसूल'(=दूत, प्रतिनिधि) को सही समझ दी ! "

उस के बाद फ़रमाया :

اِیّاکُمْ وَ کَرَائِمَ اَمْوَالِهِم

" सावधान ! प्रजा की बहुमूल्य सम्पति हड़प न करना। तुम उन के सेवक बन कर जा रहे हो , उन के अधिकारों का संरक्षण करने ज़ा रहे हो। प्रजा की धन–दौलत पर ललचाई हुई दृष्टि न डालना , और न उसे किसी प्रकार हथियाने के बहाने तलाशना।

اِتَّقُوْا دَعْوَةَ الْمَظْلُوْمِ فَاِنَّهٗ لَيْسَ بَيْنَ اللّٰهِ وَ بَيْنَهَا حِجَاب

यह भी ध्यान रहे : प्रजा पर ज़ुल्म न ढाना , क्योंकि मज़लूम की आह (=हाय) सीधे परमात्मा तक जा पहुंचती है। उस आह और परमात्मा के बीच कोई परदा नहीं रहता। याद रखो मज़लूम के कारण मुसलमान हाकिम (अल्लाह से सज़ा) पायेगा'।"

यह थी वह उदार राजनीति जिस की प्रेरणा हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) ने दी। यह बेमिसाल राजनीति हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के हृदय की विशालता को ज्ञापित करती है। ग़ैरमुस्लिमों के हितों , अधिकारों और मानसम्मान की न्यायोचित रक्षा करना – यह बात हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के निकट " ***ईमान*** " का प्रधान अंग है।

पश्चिमी राष्ट्रों के लिये यही उचित है कि वे हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की इन कल्याणमय शिक्षाओं से सीख हासिल करें। क्योंकि पश्चिमी राष्ट्रों को जब भी किसी पूरबी जाति या देश पर शासन करने का अवसर मिलता है तो वे अपनी वास्तविक राजनीति (STATE POLICY) को गुप्त रखते हैं , और जिस पॉलसी की घोषणा पूरब वालों के सामने करते हैं वह कछ और ही होती है। यही कारण है कि जब पश्चिम वालों की असल पॉलसी का परदा फ़ाश होता है तो उनके अधीनस्थ जातियों के दिलों को गहरी चोट लगती है। फिर उन के कानून अपनी जाति के लिये और होते हैं , अधीनस्थ जातियों के लिये और। फ़ैसला करते समय वे न्याय से ज़्यादा अपनी नाक का यानि PRESTIGE का विशेष ध्यान रखते हैं। इस दूषित व्यवहार से प्रजा के दिलों में नफ़रत पैदा होने लगती है। यही नफ़रत आगे चलकर उनके राज्य के पतन व ह्रास का प्रमुख कारण बन जाती है। इस लिये पश्चिम वासियों के लिये परमावश्यक है कि वे हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की शासन प्रणाली को अपनाएं , ताकि सात्त्विक शांति स्थापित हो जाये।

# न्याय और इन्साफ़

फ़ैसला सुनाते वक़्त हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ने कभी मुस्लिम और ग़ैरमुस्लिम में काई अन्तर न किया। करते भी कैसे , उन्हें तो स्पष्ट आदेश मिला था :

لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَنْ لَا تَعْدِلُوا

"यदि किसी ग़ैरमुस्लिम क़ौम या जाति ने मुसलमानों के साथ दुश्मनी भी की हो , तब भी उन के साथ पूरा पूरा न्याय किया जाये। ऐसा न हो कि उन की शत्रुता के कारण तुम न्याय और इन्साफ़ का दामन हाथ से छोड़ दो।"(क़ुर्आन ५ : ८)

اِعْدِلُوا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى

"हर मामले में न्याय को दृष्टिगत रखो , क्योंकि न्यायपरता ही धर्मपरायणता के अधिक समीप है।" (क़ुर्आन ५ : ८)

हज़रत पैग़म्बर—श्री (सल्ल॰) ही वह एकमात्र महापुरुष हैं जिन्हों ने ग़ैरमुस्लिम प्रजा के साथ न्याययुक्त व्यवहार को धर्मपरायणता की संज्ञा दी। आप ने बार बार फ़रमाया कि परमेश्वर ' ***रब्बुल् आलमीन*** ' है , अर्थात् संसार में बसने वाली समस्त क़ौमों और जातियों का एकमात्र पालनहार—स्रष्टा। उस की दृष्टि में सभी क़ौमें और जातियां एक जनसमूह या एक विराट जनपरिवार के समान हैं। जो लोग निःस्वार्थ भाव से इस विराट मानव—परिवार की सेवा करते हैं वही वास्तव में ईश्वर के प्रेमपात्र बनते हैं।

राजनीति के क्षेत्र में ग़ैर—क़ौम या परजाति के साथ विशुद्ध न्याय करने की अनेकें क़ौमों और जातियों ने कोशिश की , पर वे असफल रहीं। कारण , क़ौमों और जातियों के लिये प्रायः क़ौमियत या जातिवादिता , धर्मवादिता , भाषावादिता इत्यदि जैसी अनुदार भावनाओं से ऊपर उठकर न्यायोचित व्यवहार करना कठिन है। सत्तारूढ़ होते ही क़ौमें अपने जातिजनों का ही हित सौचने लग जाती हैं , उन के मन में अधीनस्थ क़ौमों और जातियों के हिताहित का विचार ही नहीं आता। उलटा अधीनस्थ क़ौमों और जातियों के ख़ून—पसीने की कमाई को किसी बहाने हथियाने के तरीक़े सोचने लगते हैं। अधीनस्थ लोगों की मेहनत से बनी हुई कलाकृतियां अपने देश में ले जा कर मालामाल हो जाते हैं। यही स्वार्थ उन्हें ऐसे ऐसे हरबे ढूँढ निकालने पर मजबूर कर देता है जिस से वे अधीनस्थ क़ौमों और जातियों की ग़ुलामी की ज़न्जीरें दृढ़ से दृढ़तम कर देते हैं। हज़रत पैग़म्बर—श्री(सल्ल॰) ने इस कुप्रवृति को जड़ से ही उखाड़ फेंका। आप ने मुसलमान हाकिमों को यह सीख दी :

اِيَّاكُمْ وَ كَرَائِمَ اَمْوَالِهِمْ

"सावधान ! कहीं तुम अधीनस्थ क़ौमों या जातियों के अव्वल दर्जे का माल हड़पने न लगो।"

# 36

# ग़ैर–मुस्लिमों से न्याय : सुन्दर उदाहरण

हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) ने जब कभी कोई आदेश जारी फरमाया, तो अवसर पाते ही उस का पालन भी करदिखाया। कारण, कि उन की शिक्षाएं छलकपट और बनावट से रिक्त थीं। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) का अपना कथन है :

وَمَا اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْن

"मैं कभी आडंबर या दिखावे से काम नहीं लेता, हर बात साफ़ और खरी करता हूँ।"

एक बार हज़रत पैग़बर–श्री(सल्ल०) के पास एक मुसलमान और एक यहूदी का मुक़दमा आया। यहूदी ग़ैरमुस्लिम होने के साथ साथ इस्लाम धर्म का शत्रु भी था। दूसरी ओर तअमहा नामक अन्सारी मुसलमान था। अन्सार जाति ने ***'हिजरत'***(धर्म हेतु स्वदेश त्याग) के अवसर पंर हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) और उन के ***'मुहाजिर'*** ( स्वदेश त्याग कर मक्का से मदीना आने वाले ) साथियों के साथ जो प्रेमपूर्वक व्यवहार किया था उसकी दूसरी मिसाल संपूर्ण विश्व–इतिहास में और कहीं नहीं। अन्सार जाति के इस अपूव सद्व्यवहार के कारण हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) और 'मुहाजिर' मुसलमान उनके विशेष आभारी थे। तअमहा अन्सार जाति का ही सदस्य था। उस के खिलाफ़ यहूदी ने यह शिकायत की थी कि वह कवच जो मेरे घर से बरामद हुआ था वह तअमहा ने ही मेरे घर में फेंक रखा था, अतः अपराधी तअमहा है मैं नहीं। इस मुक़दमे से मदीने की संपूर्ण अन्सार जाति का चिन्तित हो उठना स्वाभाविक था, क्योंकि इस में उन की मर्यादा और आत्मसम्मान का सवाल था। वे हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुए और निवेदन किया कि यहूदी अपवित्र है, झूठा है, तअमहा पर अकारण ही दोष घरता है। और फिर तअमहा के अपराधी साबित हो जाने से सारी अन्सार जाति की नाक कट जाये गी। यह अकेले तअमहा का मामला नहीं संपूर्ण जाति की इज़्ज़त का मामला है। इस लिये आप सोच–समझ कर फ़ैसला करें। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) ने मामले की खोजबीन के आदेश दिये। खोजबीन से यहूदी सच्चा और तअमहा अपराधी पाया गया। हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल०) ने यहूदी को निस्संकोच बरी कर दिया, और मुसलमानों की नाक की परवा किये बिना तअमहा को सज़ा सुना दी। यह है परमेश्वर का भेजा हुआ विश्वव्यापी पैग़म्बर, जिस के पावन हृदय में किसी भी व्यक्ति के लिये मलिनता, वैर या द्वेष

नहीं ! उसके विशाल हृदय में संपूर्ण मनुष्य–जाति के प्रति असीम प्रेम है , दया है और स्नेह है (सल्ल॰)।

# राजघराने की महिला

क़ुरैश यानि हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) के क़बीले की एक महिला ने चोरी की। क़ुरैश वालों को इस बात से चिन्ता होने लगी , कि अगर इस औरत को सज़ा हुई तो सारे क़बीले के नाम को बट्टा लग जाए गा। बदनामी से बचने के लिये उन्हों ने आपस में विचार–विमर्श किया। सब ने यही मशवरा दिया कि उसामा को , जो हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) का लाडला है , हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की सेवा में सिफारिश केलिये भेजा जाये। उन की इच्छानुसार उसामा हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुआ , और उस औरत को बर्री कर देने की सिफारिश की। यह सुनते ही हज़रत पैग़म्बर–श्री(सल्ल॰) ने उसामा को , बावजूद लाडला और विशेष प्रिय होने के , बड़ी सख़्ती से डांटा और फरमाया :

أَتَشْفَعُ فِىْ حَدٍّ مِنْ حُدُوْدِ اللهِ، هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ
إِذَا سَرَقَ فِيهِمِ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ وَإِذَا سَرَقَ فِيهِمِ الضَّعِيفُ
أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ وَإِنْ فَاطِمَةَ بِنْتُ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعْتُ يَدَهَا

" क्या तू परमेश्वर के आदेशों में के एक आदेश होते हुए भी सिफारिश की जुर्अत करता है ? याद रखो ! पहली क़ौमें और राष्ट्र केवल अन्याय और नाइन्साफी के कारण ही तबाह हुए। उन का तरीक़ा यह था कि जब कोई धनवान चोरी करता तो उसे छोड़ देते , परन्तु जब कोई ग़रीब आदमी चोरी करता तो उस को सज़ा देते। मेरा तो इस मामले में यह इरादा है कि अगर मेरी अपनी बेटी फ़तिमा भी चोरी का अपराध करे तो मैं अवश्य उस का हाथ काट डालूँ गा। "

उसामा लज्जित होकर क़बीले वालों के पास वापस लौटे , और सूचना दी कि क़ुरैश वंशी होने के बावजूद यह महिला सज़ा से नहीं बच सकती। मैं ने अकारण ही परमेश्वर के आदेशों के मामले में अनुचित सिफारिश करके पाप कमाया। न्याय और इन्साफ़ के बारे में हज़रत पैग़म्बर–श्री (सल्ल॰) की उपरोक्त रूलिंग ( ruling ) पर अमल करके सत्तारूढ़ क़ौम या जाति विनाश से बच जाती है।

***समाप्त***

अल्लाह , अपार दयालु ,सतत् कृपालु के मंगलमय नाम से।

# फुटनोट और व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ

१. " ***सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम*** " ( अर्थात् उन पर अल्लाह की अपार कृपा और शांति वर्षित हो ) का संक्षिप्त रूप। जहाँ भी हज़रत पैग़म्बर–श्री मुहम्मद का शुभ नाम आये पूरा वाक्य पढ़ना चाहिये।

२. " ***अवतार*** " शब्द को यों परिभाषित किया गया है : "He is necessarily a man with a message."( The Bhagavad Gita by S.Chidbhvananda, Sri Ramakrishna Misson, P.45 ). यही अर्थ " ***रसूल और पैग़म्बर*** " का है। एक और हिन्दू विद्वान ने लिखा है : "No man born is a God, whether he is Sri Krishna,Sri Rama or Jesus. They were simply the guiding human spirits of the time and hence, the ignorant man elevates them to godhood." ( Remedy the Frauds in Hinduism , by Kuttikhat Purushothama Chon, Bombay, 1991AD, P.34 ).

३. " ***अलैहिस् सलाम*** " ( अर्थात् उस पर अल्लाह की शांति वर्षित हो ) का संक्षिप्त रूप , पढ़ते समय पूरा वाक्य पढ़ना चाहिये।

४. मूलपुरुष का अरबी नाम " ***आदम*** " है , हमारा ' ***आदमी*** ' शब्द इसी तथ्य का बोधक है।

५. ये सभी ऐतिहासिक पत्र खोजे जा चुके हैं। इन के फोटो चित्र अति सुलभ हैं।

६. पत्रों के नीचे अंकित मोहर के शब्द इसी तरह तीन लाइनों में थे। यदि ***मुहम्मद रसूल अल्लाह*** शब्दों को एक पंक्ति में लिखा जाये तो मुहम्मद का नाम पहले और अल्लाह का अन्त पर आये गा। यह बात शिष्टाचार और प्रभु–श्रद्धा से मेल नहीं खाती। अरब के अनपढ़ पैग़म्बर (सल्ल॰) ने इन शब्दों को इस तरह तीन अलग अलग पंक्तियों में रख दिया कि मानो वे संपूर्ण इस्लाम धर्म का तत्त्व–चिन्ह हों। अल्लाह शब्द को ऊपरी पंक्ति में रखकर यह बता दिया कि ईश्वर का स्थान हर हालत में सर्वोच्च ही रहना चाहिये। अपने नाम को नीचे वाली पंक्ति में रख कर यह बता दिया कि में ईश्वर का अति विनम्र सेवक हूँ , पूर्ववर्ती धर्मसमाजों की तरह कहीं तुम भी मुझे ईश्वरत्व के आसन पर बिठाने की गलती न कर बैठना , में ईश्वर का रसूल यानि संदेष्टा मात्र हूँ। इसी संदर्भ में ये पत्र भेजे जा रहे हैं।

७. दुर्भाग्यवश हिन्दू शास्त्रानुसार शूद्र ऐसे ही अपमानजनक व्यवहार का अधिकारी है। हम यहां ' ***बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी*** ' द्वारा प्रकाशित ***वैदिक कोश*** के कुछ अंश उद्धृत करते हैं :

" पंचविंश ब्रह्मण ६.१.११ में कहा गया है कि यदि शूद्र बहुत धनी (= बहु–पशु) भी बन जाये तो भी उस का असली काम अन्य वर्ण के लोगों का" पद–प्रक्षालन " करना है। महाभारत में बार बार आया है कि शूद्र का अपना धन कुछ नहीं है " नहि स्वमस्ति शूद्रस्य " द्र० महाभारत १२.३०.७३।....वैदिक विधानों में शूद्र की उपेक्षा की गई है और दूसरे वर्णों के लिये सब बातें कही गई हैं ..... शतपथ ब्रह्मण ३.१.१.१० कहता है कि यज्ञ के लिये दीक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्ति को शूद्र से नहीं बोलना चाहिये .......यज्ञ के अवसर पर यज्ञशाला में शूद्र नहीं घुस सकता, क्योंकि शूद्र को यज्ञ करने योग्य नहीं माना गया है।.....शूद्र को सोम पान न करने वाला बताया गया है......याजुष संहिताओं में तो शूद्र को परुषमेध की बलियों की सूची में गिनाया गया है ....... सूत्रों में ऐसे अनेक नियमों का उल्लेख मिलता है जिन में शूद्रों की निम्नता उभर आती है : .....शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है ( गौतम, १२.४.६ )। उस के संपर्क से बचना चाहिये .... उन के भोजन को त्याज्य कहा गया है ...... वह इच्छानुसार वध्य (=यथाकामवध्यः ) था ...... उसे न तो संपति का अधिकार था और न जीवन का ही।" ( ' ***वैदिक कोश*** ', सूर्यकान्त , पृष्ठ ४६१ से ४६२ , प्रथम संस्करण )

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने भी महा तपस्वी शंबूक का सिर्फ इस लिये वध कर दिया था कि उस ने " शूद्र हो कर ब्रह्मण बनने की धृष्टता की थी " ( ***रामायण,*** उत्तर० ७६.४ , ***महाभारत*** , शांति० १४६.६२ )।

८. तुलना करें " ***श्रीमद्भगवद्गीता*** " ९.३२ , जहाँ सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना " ***मनुष्य*** " के लिये " पापयोनि " जैसा अपमानजनक शब्द प्रयुक्त हुआ है।

९. इस संबंध में पहली बात तो यही है कि वेदों में इस सिद्धांत का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं , संदिग्धार्थक स्थलों पर धर्मसिद्धांतों की नीवँ नहीं रखी जा सकती। क़ुर्आन शरीफ़ के कथनानुसार मनुष्य के सुख दुख का आधार पूर्वकृत पुण्यापुण्य नहीं। प्रत्येक बालक संसार में खाली हाथ आता है , पुण्यापुण्य का उपार्जन यहीं होता है। हाँ ! प्रभु अपने बन्दों की आज़माइश ज़रूर करता है। इस आज़माइश में दुख शिक्षा के लिये और सुख मानवता की परिक्षा के लिये होता है। वैसे भी भौतिक धनदौलत या सुखसुविधा को सात्विकता का प्रतीक नहीं माना जासकता। अगर यही बात होती तो फिर सन्त–महात्मा इस पर स्वेच्छापूवक लात न मारते। वे कदापि कष्ट सह सह कर जपतप न करते। अवतारों के मामले में

तो किसी पूर्वकृत कर्माकर्म का प्रश्न ही नहीं , क्योंकि वे निर्दोष एवं पुण्यस्वरूप होते हैं। क्या उन के दुखों , कष्टों , संकटों या आपत्तियों को देख कर उन्हें अधम की संज्ञा देना उचित होगा ? स्थानाभाव के कारण हम यहाँ सविस्तार बहस नहीं कर सकते। इस विषय पर मुद्रित सामग्री उपलब्ध है।

१०. हम इस संदर्भ में यहाँ ईसाई विद्वानों के केवल दो हवाले नक़ल करते हैं : " मुसलमान सर्वदा विजित जातियों को अपने धर्म के पालन में स्वतंत्र छोड़ देते थे। यदि ईसाई जातियों ने अपने विजेताओं के धर्म को स्वीकार कर लिया , और उन की भाषा भी ग्रहण कर ली तो यह केवल इस कारण से था कि उन्हों ने अपने नये शासकों को अपने पुराने शासकों से अधिक न्यायशील और उन के धर्म को अपने धर्म से अधिक सत्य और सरल पाया। "(डा० लीबान , देखो " इस्लाम का सर्वव्यापी प्रभाव ",संकलनकर्ता, अबू मोहम्मद इमामुद्दीन, १६४६, पृष्ठ १००)।

" ईसाई शासन के दौरान ग़ैर–ईसाइयों को ज़िन्दा जला दिया जाता , जबकि " हिलाल " (नया चाँद, इस्लामी ध्वज का निशान) अर्थात् इस्लामी शासन के अधीन हर जाति अपने अपने धर्म का स्वेच्छापूर्वक एवं स्वतंत्र रूप से पालन कर सकती थी। " (Trietschke , vide ***"The Light"*** Lahore, Dec.24,1938)

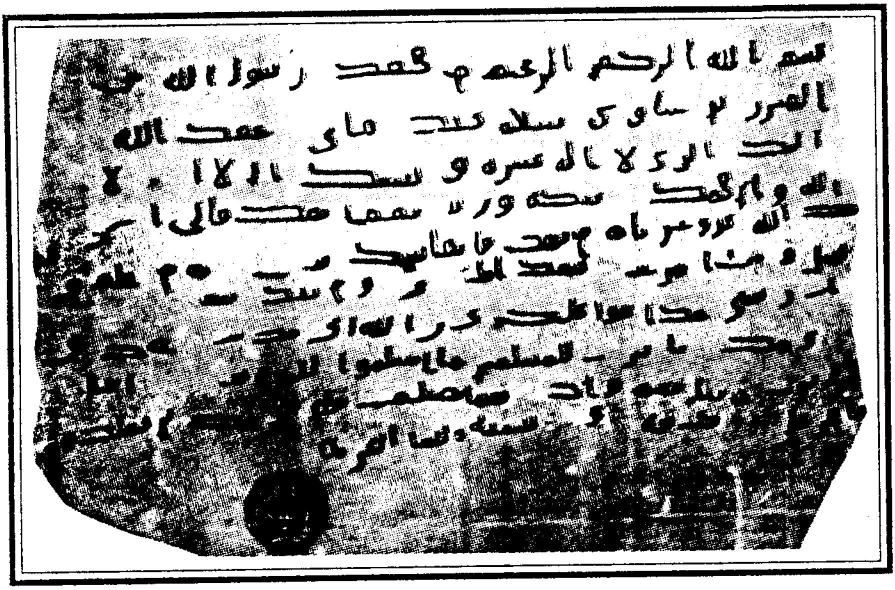

हज़रत पैग़म्बरश्री मुहम्मद[सल्ल] के दो एतिहासिक पत्रों के छायाचित्र जो उन्हों ने बहरैन के राजपाल मुन्ज़िर सावी (ऊपर) और मिस्र के सम्राट मक़वक़िस (नीचे)को भेजे। हज़रत पैग़म्बरश्री की मोहर के अक्षर साफ़ पढ़े जा सकते हैं।

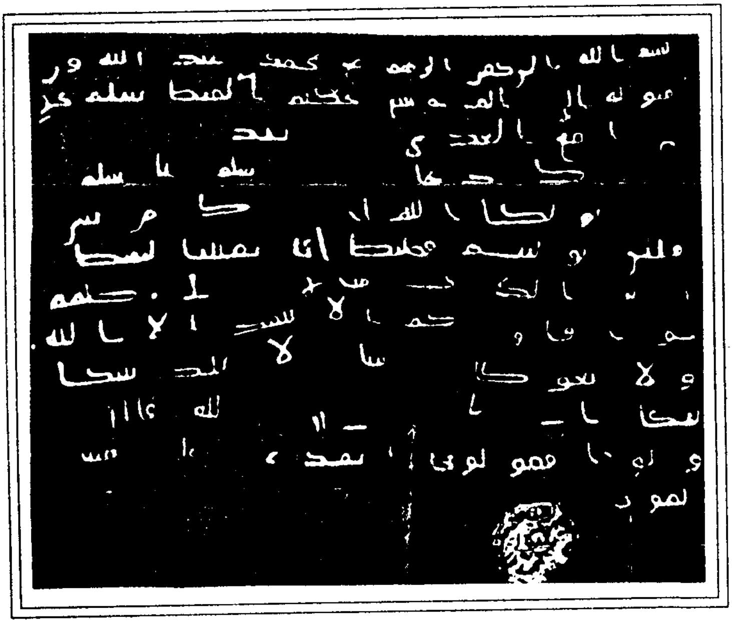

# हमारे कुछ अन्य ख्यातिप्राप्त प्रकाशन

## कुर्आन शरीफ़ की अंग्रेज़ी टीका

♦ "मौलाना मुहम्मद अली साहिब ने कुर्आन शरीफ़ का अंग्रजी में अनुवाद करके इस्लाम की जो महत्त्वपूर्ण सेवा की है उस की महत्ता को स्वीकार न करना मानो सूरज की रोशनी से इन्कार करना है। इस अनुवाद द्वारा न सिर्फ हज़ारों ग़ैरमुस्लिमों ने इस्लाम के शीतल आँचल में शरण ली बल्कि हज़ारों मुसलमान भी इस्लाम के और अधिक निकट आगए। जहाँ तक मेरा अपना संबंध है मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ कि यह अनुवाद गिनती की उन चन्द किताबों में से है जो चौदाह पंद्राह साल पहले ,जब मैं नास्तिकता और अधर्म रूपी अँधाकरों की गहराइयों में भटक रहा था ,मेरे लिए मार्गदीप बन कर आई और मुझे इस्लाम का मार्ग दिखाया।"

(मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी[रअ] ,कुर्आन शरीफ़ के मशहूर टीकाकार)

♦ "यह कुर्आन शरीफ़ का अंग्रेज़ी भाषा में प्रमाणिकतम अनुवाद है ,इस में ज्ञानप्रज्ञान से भरे हुए फुटनोट दर्ज हैं।"

(मौलाना मुहम्मद अली "जौहर" आफ़ खिलाफत मूवमेंट)

## कुर्आन शरीफ़ की विश्वकोशीय उर्दू तफ़सीर (टीका)

♦ "(मौलाना मुहम्मद अली साहिब[रअ] का) यह अनुवाद साम्प्रदायिक मान्यताओं की अभिव्यक्ति से लगभग रिक्त है ,मौलाना साहिब ने बड़ी सावधानी से अनुवादक की भूमिका निभाई है .......... उन्हों ने यह अनुवाद बड़ी श्रद्धा और आम जनमत को दृष्टि में रखते हुए किया है।"

(डा. सालिहा अब्दुल्हकीम शरफ उद्दीन की कृति *'कुर्आन हकीम के उर्दू तराजिम'*)

♦ "यह इतनी उच्च्य कोटि की तफ़सीर है कि शायद उर्दू भाषा का साहित्य रूपी ख़ज़ाना ऐसे कांतिमान रत्न दुर्लभता से भी न निकाल सके।" (मौलाना ज़फर अली खाँ[रअ] ,संपादक अखबार *'ज़मीनदार'* लाहौर)

## हदीस सार (Manual of Hadith)

♦ ".....इस तरह इस के विभिन्न अध्यायों में वे सारी हदीसें (और आयतें) आ गई हैं जिन की एक मुसलमान को अपने दैनिक जीवन में आवश्यकता पड़ सकती है ...... यह इतना बड़ा महाकार्य है जो एक *'अहमदी'* के हाथों सम्पन्न हुआ ,इस श्रेष्ठ कृति की नुकताचीनी या छिद्रान्वेषण कोरी मूर्खता है।" (मौलाना अब्दुल माजिद दर्याबादी[रअ])